★ वर्ष 43 ★ अंक 10 ★ अक्टूबर 2016

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
46. जन्मदिन मुबारक
47. आपके पत्र मिले
48. रंग भरो परिणाम
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

7. बच्चे मन के सच्चे
: रूपनारायण काबरा

22. रावण जला नहीं है
: अंकुश्री

23. महानता
: गौरीशंकर कुमार

29. परोपकारी मधुमक्खी
: शिवचरण मंत्री

32. किशन और मंजरी
: बुशरा अलवेरा

40. अन्न की नसीहत
: डॉ. सेवा नन्दवाल

कविताएं

9. दीपक
: मोती विमल

19. लाल बहादुर शास्त्री
: प्रियवीर हेमाइना

21. दीपावली का त्योहार
: गफूर 'स्नेही'

26. वन्यजीव और मानव
: डॉ. परशुराम शुक्ल

31. शेखचिल्ली की शेखी
: राधेलाल 'नवचक्र'

39. गाँधी जी के तीन बन्दर
: डॉ. ममता खत्री

विशेष / लेख

8. प्रमुख दिवस – अक्टूबर माह
: ओम सिंह

10. महात्मा गाँधी की अविस्मरणीय बातें
: जयेन्द्र

16. कुदरत के खौफनाक दरख्त
: कमल सौगानी

18. प्रमुख स्थानों के भौगोलिक उपनाम
: ओम सिंह पंवार

24. ऐसे हुआ एवरेस्ट का नामकरण
: विद्या प्रकाश

25. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

28. रंग–बिरंगे बिच्छु
: अर्चना सौगानी

38. समुद्र के भीतर भी पर्वत
: विभा वर्मा

सबसे पहले

जय जवान, जय इन्सान

हमारे देश में दो महान व्यक्तित्व हुए हैं, उनका जन्मदिन भी 2 अक्टूबर ही है। उनकी सोच और दृष्टिकोण सकारात्मक था। वे देश के उत्थान के लिए हमेशा यत्नशील रहें। उनके नाम हैं मोहनदास कर्मचन्द गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री।

दोनों को उनके उच्च आदर्श एवं व्यक्तित्व के लिए जाना जाता है, न कि उनकी एक जैसी जन्मतिथि के कारण। संसार में अनेकों व्यक्तियों ने इस दिन जन्म लिया होगा और जन्म लेते रहेंगे; परन्तु इन दो महान पुरुषों का उच्च व्यक्तित्व एवं आचरण ही उन्हें महान पुरुष का दर्जा देता है। महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया और सबको सन्देश दिया– ''बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो और बुरा मत देखो।'' साथ में परमात्मा से भी प्रार्थना की कि ''ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।'' आपने सभी देशवासियों को नैतिकता का सन्देश दिया और सबके कल्याण की ही कामना की एवं उत्तम कर्म करते हुए जीवन जीने का सन्देश दिया। आपका स्वयं का जीवन भी इन सभी गुणों से भरपूर था।

लाल बहादुर शास्त्री जी अपने साधारण जीवन और सजग व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी जीवनशैली से हर कोई स्वयं ही सरलता का पाठ सीख जाता था। आपने देश को समृद्ध बनाने और देश की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सभी देशवासियों को प्रेरित किया। आपने नारा बुलन्द किया– ''जय जवान, जय किसान।'' देश के सैनिक देश की सुरक्षा में अपने प्राण भी त्याग देते हैं। उनके प्रति आपका अगाध प्रेम था। देश में अनाज की कमी को पूरा करने के लिए आपने किसानों को अनाज की पैदावार बढ़ाने को प्रेरित किया और आपने देशवासियों को आवाह्न किया कि सप्ताह में एक दिन उपवास रखेंगे। आप स्वयं यह उपवास हर सोमवार को रखते थे और लाखों लोग भी आपका अनुसरण करने लगे थे।

प्यारे साथियों! इन सबका उल्लेख करने का अर्थ इतना ही है कि हमें भी अपने समाज एवं देश के लिए कुछ न कुछ सकारात्मक कार्य अवश्य करना है। हमारे खून में जवानों जैसा जोश होना चाहिए परन्तु हिंसा हमसे दूर होनी चाहिए। किसानों जैसी मेहनत कर अनाज की उपज बढ़ाने की क्षमता अर्थात् विचारों एवं कर्म द्वारा सृजन और कल्याण करने की भावना होनी चाहिए।

इसी सोच से हम एक अच्छे इन्सान बन सकते हैं, अच्छा इन्सान हमेशा अपने कर्तव्यों के प्रति ही उत्तरदायी होता है। हम कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहेंगे तो फिर एक नया उदाहरण अपने आप बन जाएगा और फिर ''जय जवान, जय किसान, जय इन्सान'' की जय होगी।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 139

करमां धरमां दे विच मूरख काहनूं समां गवाना एं।
गल चौरासी दा एह फन्दा मुड़ मुड़ काहनूं पाना एं।
रूह जिस नाल आज़ाद है हुन्दी ऐसी युक्ति केहड़ी ए।
सोने दी या लोहे दी ए बेड़ी आख़र बेड़ी ए।
गलों खलासी हो नहीं सकदी करमां नाल ज्ञान बिना।
जीवन मुक्ति कदे नहीं मिलदी बन्दे नूं भगवान बिना।
संगल नाल नहीं संगल कटदे कोशिश करना है बेकार।
कागज़ दे लख फुल बणाईये आ नहीं सकदी कदे बहार।
जोत अमर जोती विच मिल के अमर जोत बण जांदी ए।
कहे अवतार बूंद मिल सागर सागर ही अखवांदी ए।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी वास्तविकता को भुलाकर व्यर्थ के कर्म–धर्म के चक्करों में पड़े इन्सान को सचेत करते हुए कह रहे हैं कि मूर्ख इन्सान, तू व्यर्थ के कर्म–धर्म में पड़कर अपना समय क्यों नष्ट कर रहा है। तू क्यों चौरासी लाख योनियों के बार–बार जन्मने–मरने वाले फन्दे को अपने गले में डाल रहा है। इसे और स्पष्ट करते हुए बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि पैरों में पड़ी बेड़ी (जंजीर) सोने की हो या लोहे की, बन्धन तो बन्धन ही है और यह बन्धन इन्सान को आगे नहीं बढ़ने देता।

इन्सान! अज्ञानता में पड़ी तेरी यह आत्मा इन बन्धनों से कैसे आजाद होगी तू इसका उपाय जानने का प्रयास कर। तू यह ठीक से समझ ले कि ज्ञान के बिना केवल कर्म और खाली बातों से मुक्ति सम्भव नहीं है। भगवान से मिले बिना जीवन मुक्ति मिल पाना सम्भव नहीं है।

इन्सान तू यह बात समझ ले कि बन्धन से बन्धन को, जंजीर से जंजीर को काटने का प्रयास बेकार है। इन्सान तू यह भी जान ले कि कागज के लाखों फूल बनाकर यह सम्भव नहीं है कि बहार आ जाए।

बाबा अवतार सिंह जी इन प्रश्नों का सहज समाधान प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि इन्सान तेरी आत्मा रूपी यह ज्योति परमात्मा रूपी परमज्योति के साथ मिलकर कभी न बुझने वाली अमर ज्योति बन जाती है जिस प्रकार बूंद सागर से अलग होकर बूंद है लेकिन जैसे ही वह सागर में मिल जाती है फिर वह बूंद नहीं कहलाती उसे सागर ही कहा जाता है। इसी प्रकार ऐ इन्सान! तू सद्गुरु से मिलकर अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ इकमिक कर ले और चौरासी लाख योनियों में भटकने की पीड़ा से बच जा।

– संग्रहकर्ता :
जगतार 'चमन'

अनमोल वचन

★ एकत्व भाव की प्रधानता ही एकता का मूल है।

★ शान्ति के लिए एकता और मानवता का होना जरूरी है।

★ सुन्दर भावनाओं के कारण ही इन्सान का मयार ऊँचा होता है।

★ युग तो बदलते हैं पर सन्तों की भावनाएं नहीं बदलती।

★ इंसान धरती के लिए गौरव का कारण बने न कि अभिशाप का।

★ आँखें बन्द करके चलने से रोशनी में भी ठोकरें लगेंगी।

★ यदि जाग्रति और अनुभूति नहीं तो शान्ति और सुकून भी नहीं।

★ सभी के साथ अपनेपन की भावना से युक्त व्यवहार करो।

★ नफरत किसी से नहीं सब से प्यार करो।

★ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

★ सहनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि बल की सूचक है।

★ उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।

★ स्वस्थ विचार ही मन को स्वस्थ करने में सहायक होते हैं।

★ जिस इन्सान के पास दौलत, शोहरत, मान, नाम है अगर उसके पास इन्सानियत और प्यार नहीं है तो वो संत की नज़र में एक जिन्दा लाश है।

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है, सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफ़रत समाप्त हो जाती है। जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है।

★ प्यार और सत्कार का मूल आधार ब्रह्मज्ञान है। – बाबा हरदेव सिंह जी

★ सन्तों की संगत से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है। – निरंकारी राजमाता जी

★ जितने कम शब्द होंगे प्रार्थना उतनी ही अच्छी होगी। – मार्टिन लूथर किंग

★ विद्वान वही है जो भगवान के स्वरूप को पाता है। – पोतना

★ अगर आप समय का सही इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो पहले अपनी प्राथमिकताएं तय कीजिए। – ली लाकोका

★ हर कोई प्रतिभाशाली होता है, लेकिन अगर आप मछली को उसकी पहाड़ पर चढ़ पाने की क्षमता से आंकेंगे तो वह जीवनभर अपने आपको नालायक ही मानती रहेगी।

– अल्बर्ट आइन्स्टाइन

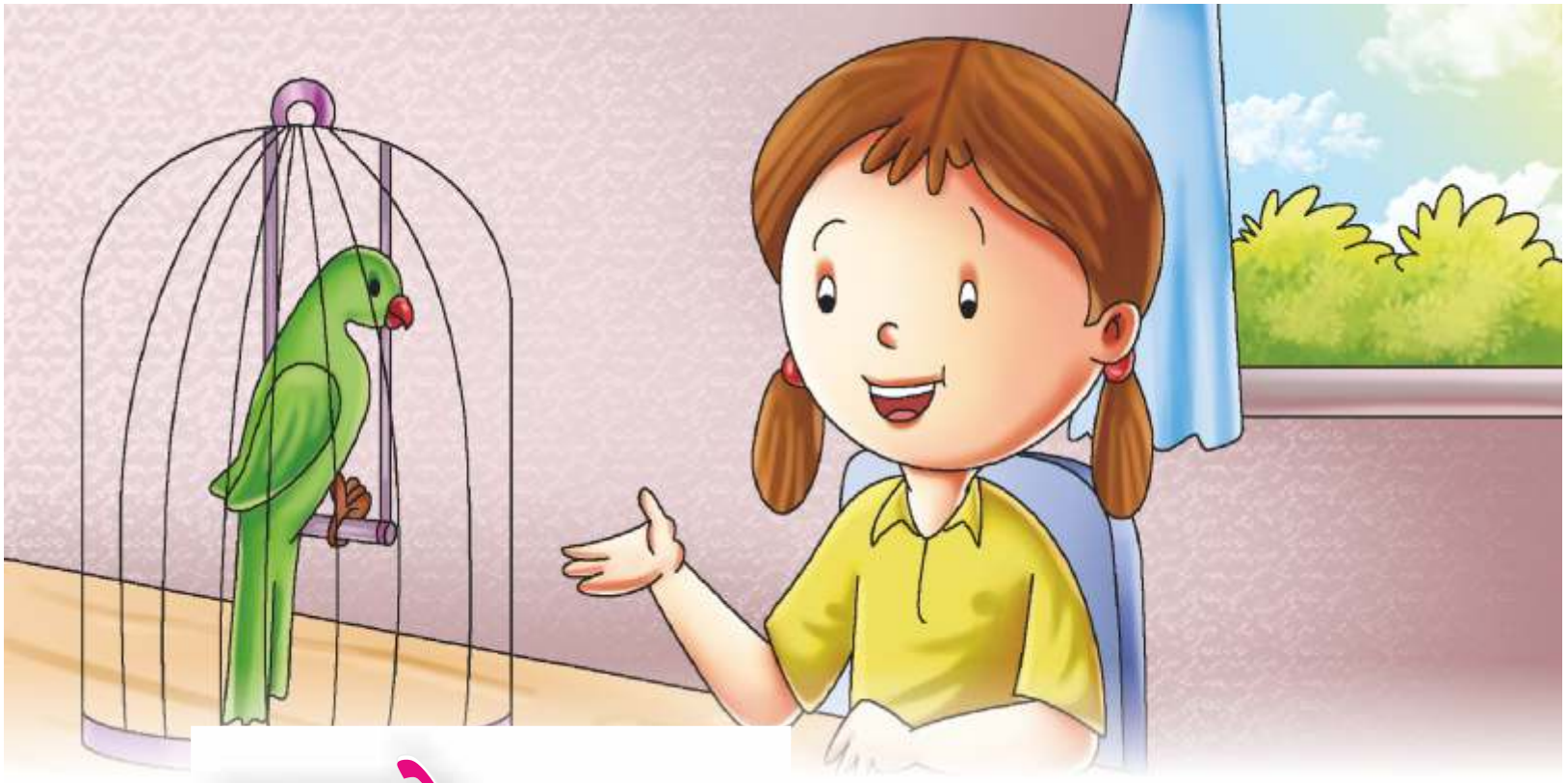

बच्चे मन के सच्चे

प्रेरक–प्रसंग :
रूपनारायण काबरा

सीमा ने पिंजरा टेबल पर रखा और अपने प्यारे तोते रोमी से बातें करने लगी–

– रोमी, तुम्हें पिंजरे में कैसा लगता है?

– सीमा, यदि तुम्हें एक कमरे में बन्द कर दे तो कैसा लगेगा?

– बहुत बुरा लगेगा। मैं तो रोऊँगी, चिल्लाऊँगी। पर तुम तो रोते नहीं रोमी।

– हमारे आंसू कौन देख पाता है। न हम हँसकर, मुस्कुराकर अपनी खुशी जाहिर कर सकते हैं और न रोकर अपनी पीड़ा।

– हम, तुम्हें इतना प्यार करते हैं, अच्छा खिलाते–पिलाते हैं, फिर भी तुम दुःखी हो क्या?

– सीमा रानी, आजादी किसे अच्छी नहीं लगती। यह सच है कि तुम्हारा प्यार–दुलार संतोष अवश्य देता है। पर नीले आसमान की वह मुक्त उड़ान, अपने संगी–साथियों के साथ झुंड में मस्ती से झूमते हुए नित नये प्रदेश देखना, तरह–तरह के फल चखना.... उस मुक्त जीवन के आगे तुम्हारी खातिरदारी कुछ भी नहीं।

– और मेरा प्यार?

– इन्सान ही क्यों – जानवर भी प्यार का भूखा होता है। तुम्हारे प्यार से ही तो जिन्दा हूँ नहीं तो अब तक इस बंदी जीवन से मुक्ति पाने के लिए कभी का सिर पटक–पटककर मर जाता।

– क्या तुम्हें अपनी आजादी के अलावा भी यहाँ कोई दुःख है?

– सच पूछो तो अपनी आजादी तो शायद मैं भूल चुका हूँ। →

– संग्रहकर्ता : ओमसिंह (भीम)

प्रमुख दिवस — अक्टूबर माह

1 अक्टूबर	विश्व वृद्धजन दिवस
2 अक्टूबर	गाँधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती
3 अक्टूबर	विश्व आवास दिवस
8 अक्टूबर	भारतीय वायुसेना दिवस
9 अक्टूबर	विश्व डाक दिवस
9 से 15 अक्टूबर	राष्ट्रीय डाक सप्ताह
10 अक्टूबर	विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
10 से 17 अक्टूबर	राष्ट्रीय विधिक सहायता सप्ताह
13 अक्टूबर	विश्व दृष्टि दिवस
14 अक्टूबर	विश्व मानक दिवस
15 अक्टूबर	विश्व ग्रामीण महिला दिवस
16 अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस
17 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस
21. अक्टूबर	विश्व आयोडीन अल्पता विकार निवारण दिवस, आजाद हिन्द फौज का स्थापना दिवस
24. अक्टूबर	संयुक्त राष्ट्र दिवस
27. अक्टूबर	पैदल सेना दिवस
30. अक्टूबर	विश्व मितव्ययता दिवस
31. अक्टूबर	राष्ट्रीय एकता दिवस

→

शायद अब उतना उड़ भी न पाऊँ। मेरे संगी–साथी भी शायद मुझे अब नहीं अपनाएं। बाज का शिकार न बन जाऊँ यह भी आशंका है। यहाँ सुरक्षित तो हूँ। पर अब मेरा दुःख कुछ और ही है।

– वह क्या है, रोमी?

– तुम बुरा मत मानना सीमा। जब घर में तुम्हारे पापा को बेईमानी और रिश्वत खाने की बातें करते हुए सुनता हूँ तो मुझे अच्छा नहीं लगता। कल ही तुम्हारे पापा मास्टरजी से कह रहे थे ''शैलू को पास कर देना, मैं आपको सूट बनवा दूंगा।'' दुःख तब दुगुना हो गया जब देखा कि मास्टरजी भी बिक गए। जब मार्गदर्शक और भावी देश का निर्माता ही बिकने लग जाएगा तो इस देश का भविष्य क्या होगा?

– रोमी, तुम्हें भी अपने देश का ख्याल है।

– क्यों नहीं। मैं भी इसी धरती का अन्न–जल खाता हूँ; इसी की हवा में सांस लेता हूँ..... ।

– रोमी, तुम सच कहते हो। जो कुछ मेरे घर में होता है मैं इसका विरोध करूँगी। क्या तुम मेरा साथ दोगे?

– विरोध करोगी, पर कैसे?

– बापू के दिए हुए हथियार – सत्याग्रह और अनशन से।

– ओट में खड़े पिता ने सबकुछ सुन लिया था। उन्होंने आकर सीमा को चूम लिया।

– सीमा और रोमी, तुम दोनों की बातों ने आज मेरी आंखें खोल दी.... । मैं सचमुच अपने स्वार्थ एवं धन के लालच में अंधा हो गया था..... ।

कविता : मोती 'विमल'

दीपक

शक्ति का परिचायक,
भक्ति दिखाता दीपक।
खुशियों की भाषा है,
जग आलौकित दीपक।।

पहले जैसे, वैसे,
जलते आये दीपक।
लक्ष्मी के दाता बन,
देवो के प्यारे दीपक।।

स्वच्छता के हैं सूचक,
शुद्ध सुशोभित दीपक।
नये वर्ष का शुभारम्भ,
पथ दिखलाते दीपक।।

रोशन होती झोंपड़ियां,
महलों में हँसते दीपक।
ठौर–ठौर, झिलमिल–झिलमिल,
राह दिखाते हैं दीपक।।

प्रेरक–प्रसंग : जयेन्द्र

महात्मा गाँधी की अविस्मरणीय बातें

गाँधीजी सादगी और स्वावलम्बन पर विश्वास रखते थे। बाहरी तड़क–भड़क और थोथे आडम्बरों से उन्हें सख्त घृणा थी। एक पैसे की बर्बादी को भी वे देश का नुकसान मानते थे। नोआखली की यात्रा में गाँवों की महिलाएं व पुरुष उनका बहुत स्वागत करते थे, कभी तिलक करके, कभी ताड़ के पत्तों से गाँव को सजाकर। बापू को इसमें कोई ऐतराज नहीं होता था किन्तु एक बार देवीपुर गाँव में लोगों ने फूल, जरी, रेशम की पट्टियां, लाल–पीले कागज वगैरह मंगवाकर गाँव को सजाया तथा घी, तेल के दीपक भी जलाए गये। यह सजावट देखकर बापू गम्भीर हो गये। उन्होंने पूछा कि इस सजावट के लिए पैसे कहाँ से आए?

कुछ व्यक्तियों ने जवाब दिया कि लोगों से चन्दा इकट्ठा कर यह सजावट की है।

इस पर बापू बोले– ''यह सजावट एक क्षणभर में कुम्हला जाएगी। यह सब फिजूलखर्ची है। इससे तो मुझे यही लगता है कि मेरी बातों को तुम अपना नहीं रहे हो। जितने फूलों के तुमने हार पहनाएं हैं, उनके बजाय यदि सूत के हार पहनाते तो वे बाद में कपड़ा बनाने के काम भी आते, फिजूल नहीं जाते, फिर तुम तो कार्यकर्ता हो। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि मेरी दृष्टि में यह सब फिजूलखर्ची और पैसे की बर्बादी है। तुम पर से मुझे अपने सब कार्यकताओं का अन्दाज होता है कि जो कार्यकर्ता एक दिन लोगों के सेवकों के नाम से पहचाने जाते थे। उन्हें यदि लोग ओहदे पर बिठाएं, तो वे यों फूल हार पहनने–पहनाने के लालच में कहीं गिरने न लगे।''

हाँ, गाँधीजी की यह बात आज भी कितनी खरी उतरती है।

गाँधीजी के जीवन की यह एक अलग प्रेरक घटना है। अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई। प्रश्न यह आया कि दलितों को इसमें प्रवेश दिया जाए या नहीं। विद्यापीठ के नियामक मण्डल में कुछ ऐसे लोग थे जो अस्पृश्यता के हामी थे तथा इस सुधार के लिए तैयार नहीं थे। इस अनिर्णीत प्रश्न को लेकर सदस्य गाँधीजी के पास गये। उन्होंने दलितों को अनिवार्यतः प्रवेश दिये जाने पर बल दिया। इस बात की चर्चा सारे गुजरात में होने लगी। उच्च वर्ग के कुछ धनाढ्यों ने गाँधीजी से कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा का कार्य बड़ा धर्म कार्य है। और वे उसमें जितनी धनराशि गाँधीजी जी कहें, देने का तैयार हैं, किन्तु दलितों के सवाल को इससे दूर ही रखना चाहिए।

गाँधीजी ने जो उत्तर दिया वह बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा– ''विद्यापीठ निधि की बात तो अलग रही, कल अगर कोई मुझे अस्पृश्यता कायम रखने की शर्त पर हिन्दुस्तान का स्वराज्य भी दे तो मैं नहीं लूँगा।''

इसी प्रकार साम्प्रदायिकता के विष को भी वे निरन्तर दूर करने में लगे रहे, उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारे देश में जो विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं, उन सब में एकता की भावना की आवश्यकता है। हिन्दू और मुसलमान भारतीय समाज के मुख्य अंग हैं। इन दोनों के पुष्ट होने से ही समाज सशक्त हो सकता है। ऐसा वे मानते थे।

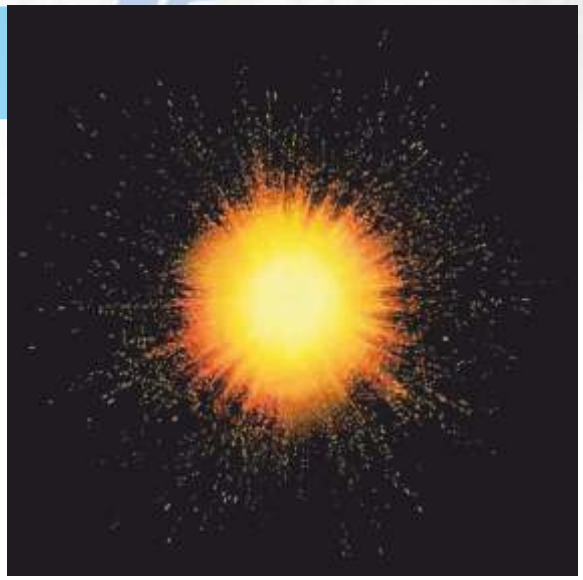

बिग बैंग की चमक में 'ब्लैकहोल' दिखा

वॉशिंगटन। वैज्ञानिकों ने नासा की चंद्र एक्सरे वेधशाला का उपयोग कर एक अहम खोज की है, बहुत दूर स्थित एक सुपरमैसिव ब्लैकहोल से निकला एक जेट या फुहार ब्रह्मांड के प्राचीनतम प्रकाश में चमक दिख रही है।

वैज्ञानिकों ने कहा कि यह खोज दिखाती है कि पहले की जानकारी के विपरीत बिग बैंग के पहले कुछ अरब साल बाद शक्तिशाली फुहारों वाले ब्लैकहोल आम थे। वैज्ञानिकों के अनुसार इस फुहार से जो प्रकाश मिला है, वह उस समय निकला जब ब्रह्मांड केवल 2.7 अरब साल पुराना था, मौजूदा उम्र का पांचवा हिस्सा। उस समय बिग बैंग से निकले ब्रह्मांडीय पृष्ठभूमीय माइक्रोवेव विकिरण (सीएमबी) की तीव्रता आज की तुलना में बहुत ज्यादा थी। ब्लैकहोल प्रणाली में पाई गई इस फुहार को 'बी–3–0724' – 'प्लस–409' का नाम दिया गया है। यह कम से कम तीन लाख प्रकाशवर्ष लम्बी फुहारों का पता लगाया गया है, लेकिन अभी यह चर्चा का मुद्दा है कि कैसे ये फुहारें एक्सरे छोड़ती हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि 'बी–3–0724' – 'प्लस–409' में एक्सरे तरंग दैर्ध्यों से सीएमबी में इजाफा हो रहा है। इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाली जेएक्सए के 'इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस एंड ऐस्ट्रोनोमिकल स्टडीज' (आईएसएएस) की औरोरा सिमियोनेसक्यू ने कहा, –चूंकि हम यह फुहार उस वक्त की देख रहे हैं जब ब्रह्मांड तीन अरब साल से भी कम उम्र का था, निकटवर्ती ब्रह्मांड की तुलना में यह फुहार एक्सरे में 150 गुना चमकीली है। (भाषा)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार (सुल्तानपुर)

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

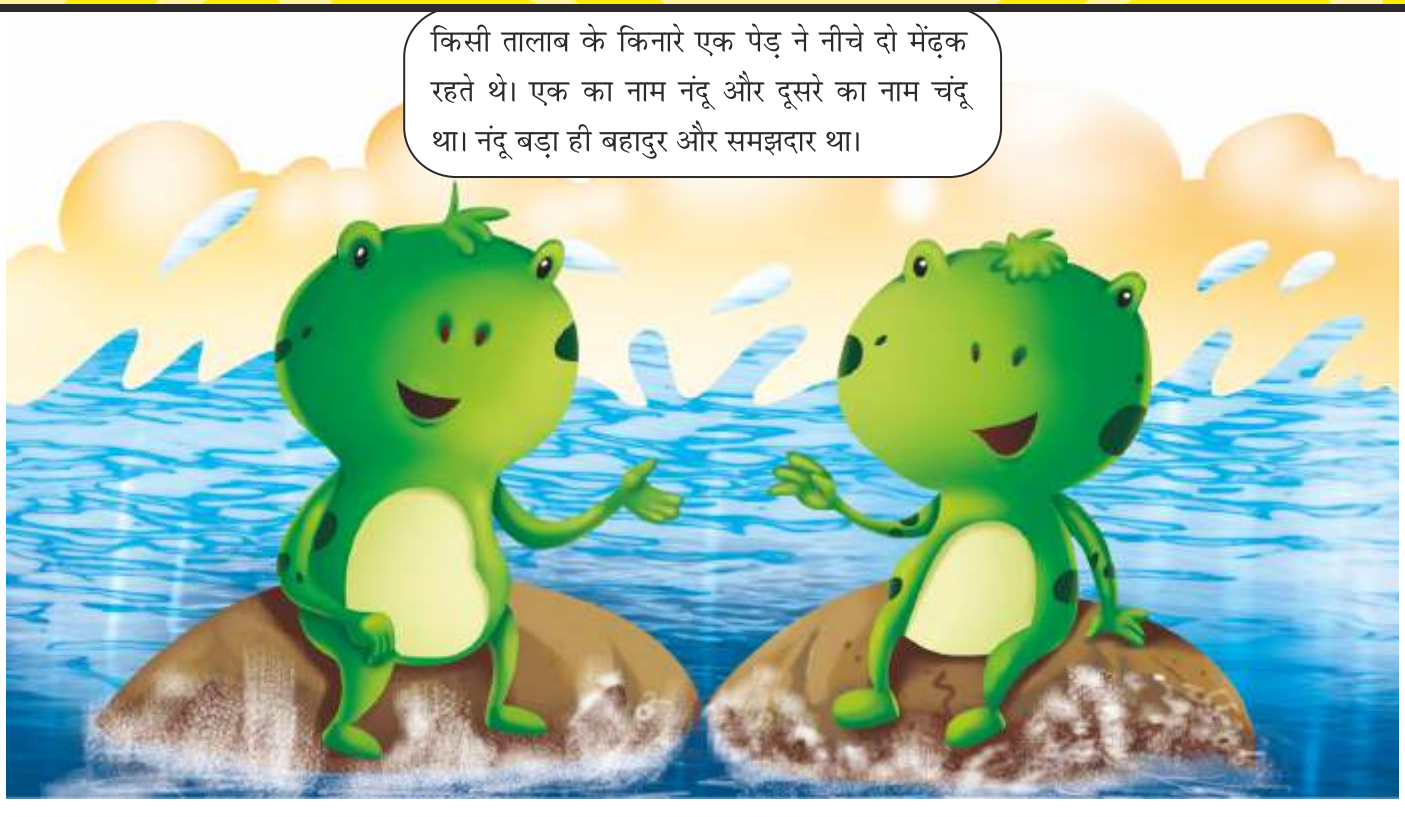

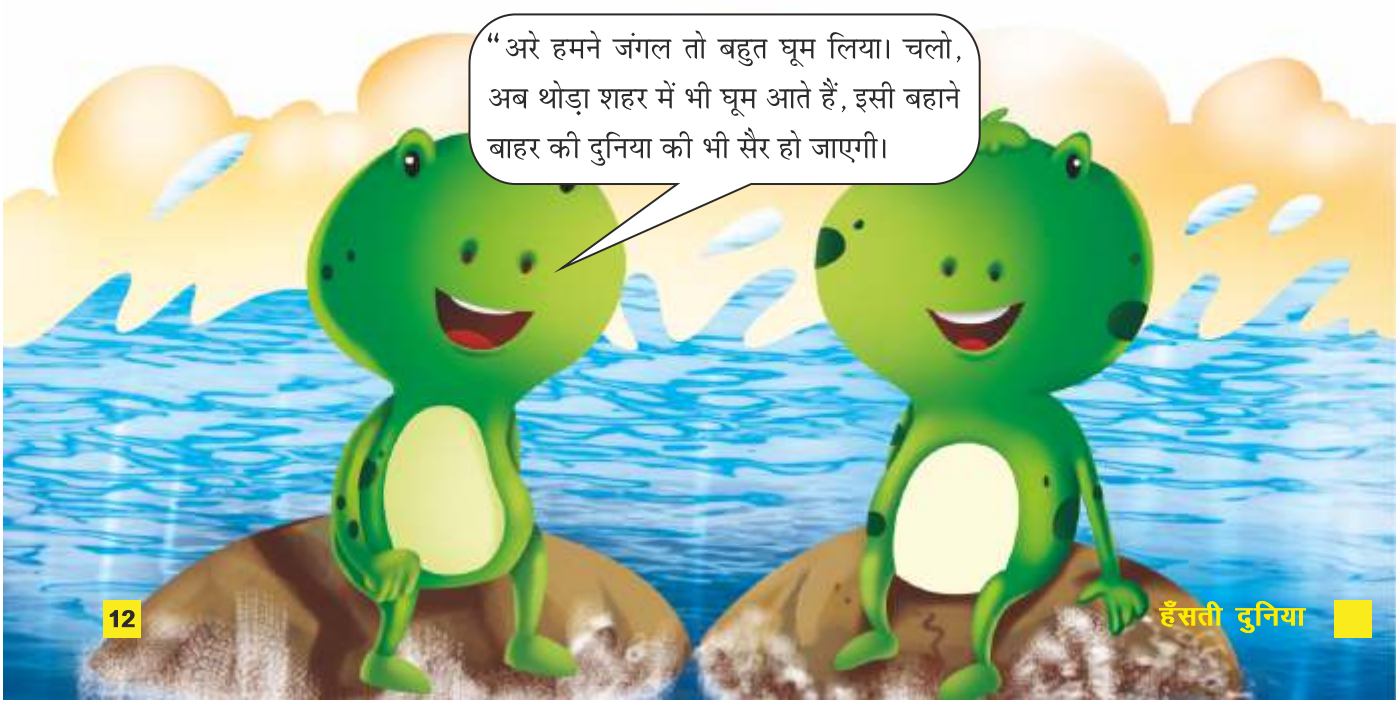

वे दोनों फुदकते-फुदकते जंगल की सीमा को पार करके शहर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने बड़ी-बड़ी इमारतें, सड़कों पर दौड़ते हुए वाहन, पैसा कमाने की दौड़ में भागते हुए लोग, खेलकूद और पढ़ाई में मस्त नन्हें-नन्हें बच्चे दिखाई दिये।

वे दोनों बहुत थक चुके थे। उनका दिल कर रहा था कि उन्हें पानी मिल जाए और कहीं गीली जगह मिल जाए तो थोड़ा आराम कर लें। पानी की तलाश में वे एक दूध वाले की दुकान में घुस गए।

वहाँ एक मटकी रखी थी, उन्हें लगा कि इस मटकी में पानी होगा। फिर क्या था, उन दोनों ने एक ऊँची छलांग लगाई और पहुँच गए मटकी के अंदर।

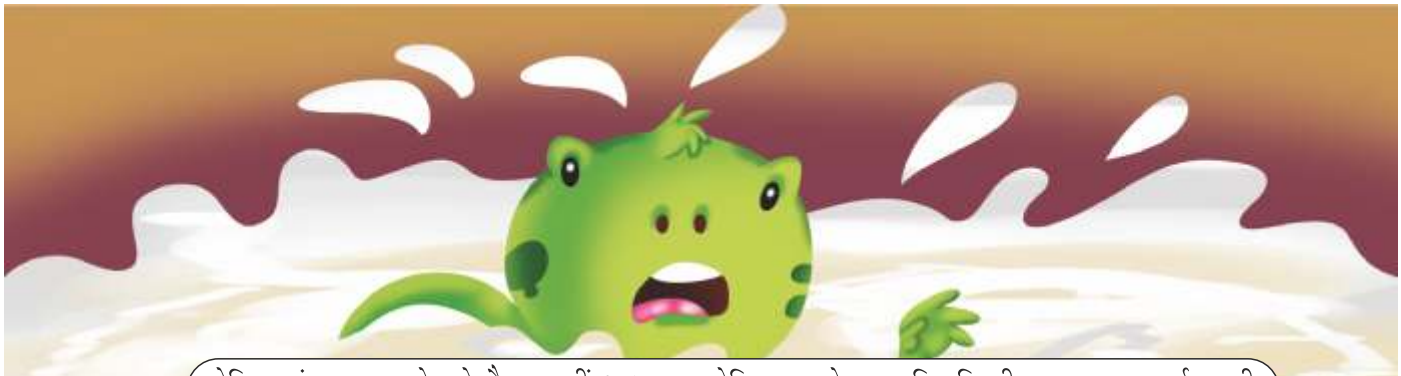

लेकिन नंदू हार मारने को तैयार नहीं था। वह कोशिश करने लगा कि किसी तरह वह मलाई वाली मटकी से बाहर निकल जाए। वह अपने पैर ज़ोर से चलाने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी वह बाहर नहीं निकल सका। फिर भी उसने हार नहीं मानी और हिम्मत का दामन नहीं छोड़ा।

काफी देर बाद उसने देखा कि वह ऊपर उठने लगा है। उसके लगातार ज़ोर-ज़ोर से पैर चलाने से मलाई भी लगातार हिल रही थी और वह मक्खन बनने लगी। नंदू के मन में उम्मीद की लहर दौड़ गई।

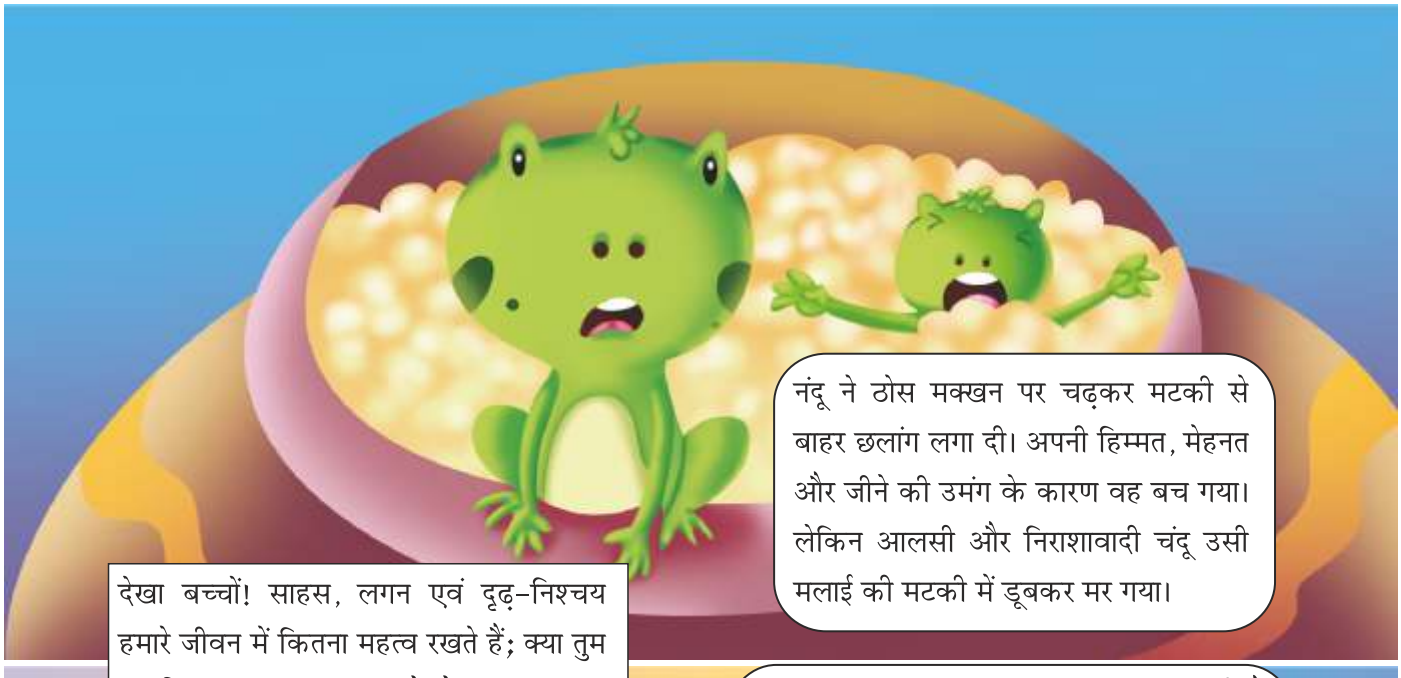
नंदू ने ठोस मक्खन पर चढ़कर मटकी से बाहर छलांग लगा दी। अपनी हिम्मत, मेहनत और जीने की उमंग के कारण वह बच गया। लेकिन आलसी और निराशावादी चंदू उसी मलाई की मटकी में डूबकर मर गया।

देखा बच्चों! साहस, लगन एवं दृढ़-निश्चय हमारे जीवन में कितना महत्व रखते हैं; क्या तुम दृढ़ निश्चय का मतलब जानते हो?
हाँ दादा जी, निश्चय का मतलब मैं बताऊँ?
हाँ बोलो।
जब हम गणित का सवाल एक बार गलत करते हैं तो घबराकर उसे दोबारा करने की कोशिश नहीं करते लेकिन जब हम उसे सही हल करने का दृढ़निश्चय कर लेते हैं तो फिर हम उसे हल कर देते हैं और हमारे अच्छे अंक आ जाते हैं।

आलेख : कमल सौगानी

कुदरत के खौफनाक दरख्त

दोस्तो! तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि इस दुनिया में ऐसे पेड़–पौधे भी हैं, जो कीट पतंगों और परिन्दों का खून पीते हैं और उनका मांस भक्षण करते हैं। ये पेड़–पौधे मांसाहारी कहलाते हैं। जैसे – स्पेन के बीहड़ जंगलों में 'ट्रोरिर्फा' प्रजाति के ऐसे जंगली पेड़ पाये जाते हैं, जो अपनी जड़ों के माध्यम से जंगली चींटियों को अपना भोजन बनाते हैं। इन पेड़ों के पत्तों पर खून जैसी लाल–लाल बूंदें जमा रहती हैं, जो हवा के साथ–साथ जमीन पर गिरती रहती हैं। इन लाल बूंदों के कारण पेड़ के आसपास की जमीन का रंग भी खून की तरह लाल हो जाया करता है।

यूगाण्डा के घने जंगलों में भी मांस भक्षी पेड़–पौधों की भरमार है। ये पेड़ तितली, टिड्डे, कीट–पतंगे, चिड़ियां आदि का भक्षण बड़े चाव से करते हैं। दरअसल इन पेड़ों का शरीर हमारे शरीर के पाचन तंत्र जैसा होता है। इन पेड़ों में एनजाइम्स और एसिड होते हैं, जो शिकारी की कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं, फिर ये पेड़ इनकी पौष्टिकता को अपने कांटेदार पत्तों के माध्यम से ग्रहण करते हैं।

दक्षिण केनिया के बीहड़ जंगलों में 'रिर्नायट ट्री' के दो सिरे होते हैं। इनके ऊपरी हिस्से में तीन लॉब्स यानी खोखले हिस्से होते हैं, जिनमें से एक को अगर छू लिया जाए तो बाकी अपने आप ही बंद हो जाते हैं, जिससे कीड़े शिकार बन जाते हैं। एक बार में ये कम से कम 70–80 कीट–पतंगों को चट कर जाते हैं। ये पेड़ मांसभक्षी होने के कारण लाल सूर्ख होते हैं।

टुन्ड्रा के बीहड़ वनों में 'डाई फार्ट' नामक पेड़ मिलते हैं। इनकी पत्तियां अलग भागों में बंटी रहती हैं। कीड़े के नजदीक आते ही यह उसे जकड़ लेती हैं, पत्तियों का बंद होना और खुलना एक वाल्व की सहायता से होता है। हाँ, यह पाचनक्रिया पूरी होने के बाद यह पुनः शिकार करने को तैयार हो जाते हैं।

साइबेरिया के दलदली जंगलों में 'पैट्रायन' नामक मांसाहारी पौधा पाया जाता है। इसके पत्ते सुराहीनुमा होते हैं तथा इनसे भीनी–भीनी सुगंध निकलती रहती है। यह सुगंध कीड़े–मकोड़ों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। इसके सुराहीनुमा पत्तों पर जैसे ही कीड़ा चढ़ता है, वह अन्दर फिसल जाता है, अन्दर वह एक विशेष प्रकार के तरल पदार्थ में गिर जाता है। सुराहीनुमा पत्ते के निचली तरफ खाना पचाने के लिए बैक्टीरिया व पाचक तत्व रहते हैं। जिससे पोषक तत्व निकाले जा सके। यह तत्व पानी में घुल मिल जाते हैं और पत्तियां इसे ग्रहण करती हैं।

पेरू के जंगलों में 'ट्रेफ्कस' प्रजाति के कांटेदार पेड़ दिखाई देते हैं, जिनसे एक तरह की मादक खुशबू निकलती रहती है। जब कोई छोटे पक्षी, कीट–पतंगें, तितलियां आकर्षित होकर कांटे के समीप आते हैं तो कांटा तेजी से इनके शरीर में प्रवेश कर खून चूस लेता है। खून चूसने के उपरान्त इन्हें जमीन पर गिरा देता है।

अफ्रीका के दलदली जंगलों में 'सनड्यू' नामक ऐसे पेड़ दिखाई देते हैं, जिनके पत्ते छोटे–छोटे होते हैं। जिन पर ओस की बूंदों के समान चमकीले कण चमकते रहते हैं जिन्हें टैंटेकल्स (नालिया) कहा जाता है। यह सूर्य की रोशनी में बूंदों की तरह चमकती हैं। कीड़े इन चमचमाती बूंदों से आकर्षित होकर नजदीक आते हैं और अचानक पेड़ के मुँहनुमा टैंटेकल्स बंद हो जाते हैं। यह एक तरह का पाचक तत्व भी छोड़ते हैं, जिससे भी कीड़े–मकोड़े स्वतः ही खींचे चले आते हैं।

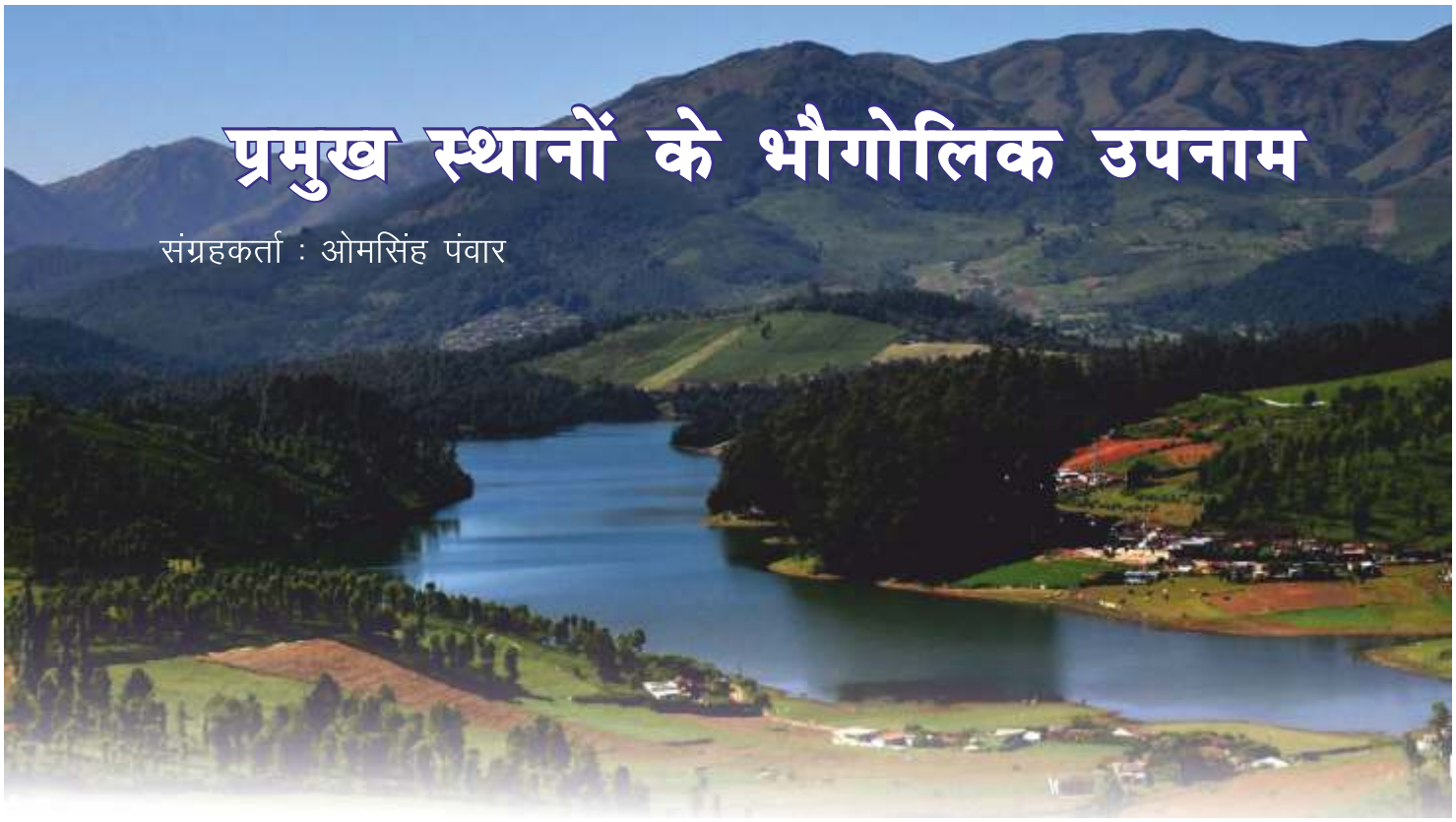

प्रमुख स्थानों के भौगोलिक उपनाम

संग्रहकर्ता : ओमसिंह पंवार

- ब्लू माउंटेन – नीलगिरी की पहाड़ियां
- पश्चिम बंगाल का शोक – दामोदर नदी
- काली नदी – शारदा
- वृद्ध गंगा – गोदावरी
- बिहार का शोक – कोसी नदी
- दक्षिण भारत की गंगा – कावेरी नदी
- पवित्र नदी – गंगा
- मलय का देश – कर्नाटक
- पांच नदियों की भूमि – पंजाब
- त्योहारों का नगर – मदुरै
- सात टापुओं का नगर – मुंबई
- महलों का शहर – कोलकाता
- नवाबों का शहर – लखनऊ
- बुनकरों का शहर – पानीपत
- पूर्व का स्कॉटलैंड – मेघालय
- भारत का स्विट्जरलैंड – कश्मीर
- अरब सागर की रानी – कोच्चि
- भारत का प्रवेश द्वार – मुंबई
- पूर्व का वेनिस – कोच्चि
- सिलिकॉन वैली – बंगलौर
- डायमंड हार्बर – कोलकाता
- पर्वतों की रानी – मसूरी
- इस्पात नगरी – जमशेदपुर
- झीलों का शहर – श्रीनगर
- मेघों का घर – मेघालय
- गुलाबी नगर – जयपुर
- सूर्य नगरी – जोधपुर
- धान का कटोरा – छत्तीसगढ़
- भारत का उद्यान – बंगलौर
- फलोद्यानों का स्वर्ग – सिक्किम
- धरती का स्वर्ग – जम्मू कश्मीर
- भारत की गोल्डन सिटी – अमृतसर

जन्म–दिवस पर विशेष

कविता : प्रियवीर हेमाइना

लाल बहादुर शास्त्री

सादा जीवन उच्च वचार
था जिनके जीवन का सार,
वे लाल बहादुर शास्त्री जी
थे प्रध नमंत्री अति उदार।

पैदा हुए थे कुटिया में
था साहस, उद्यम, सदाचार,
इसीलिए तो जीवनभर ही
कुटीजन को ही किया प्यार।

शिक्षाओं को वेद–शास्त्र की
वे किए हुए थे अंगीकार,
यही कामना थी हृदय में
परिवार बनें– आर्य परिवार।

दुश्मन के हुए हौसलें पस्त
मानी थी अपनी हार,
'ताशकन्द समझौता' करके
रोका था वह संहार।

'जय जवान, जय किसान' का
वह मंत्रदाता वह कलाकार,
'विजयघाट' में सोया है
वह आर्यावर्त्त का कर्णधार।

वर्ग पहेली

प्रस्तुतिः
विकास
अरोड़ा

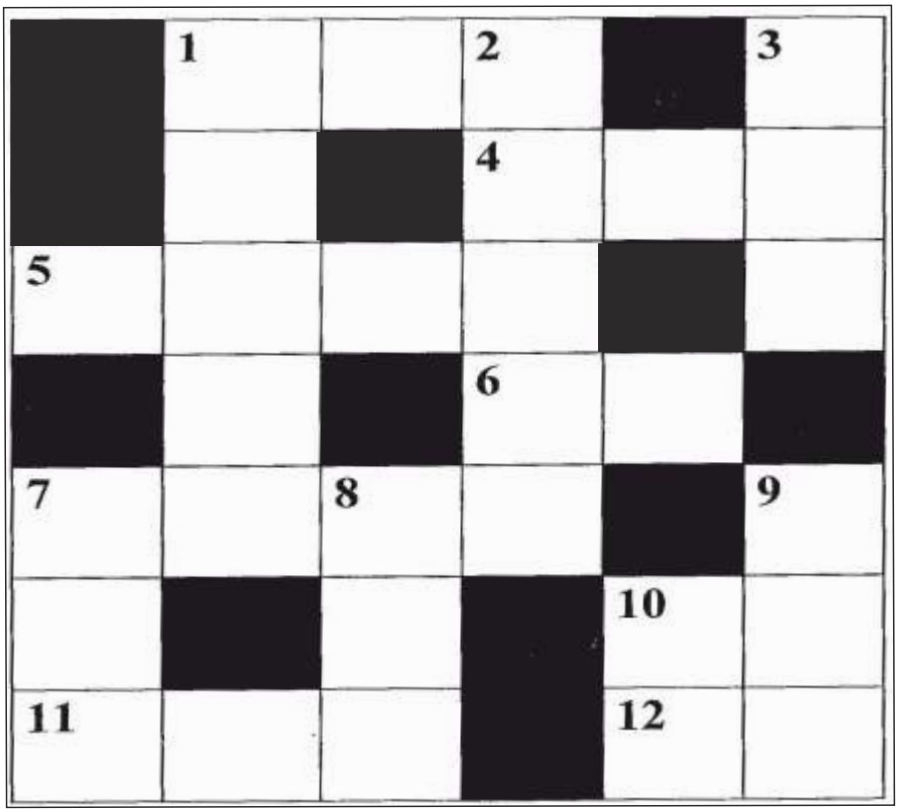

बाएं से दाएं →

1. युनानी सम्राट सिकंदर के पिता का नाम : (फिलीप / पोरस)
4. एक मीटर में एक ..... मिलीमीटर होते हैं।
5. डॉ. मनमोहन सिंह से पहले अटल बिहारी वाजपेयी और उनसे पहले भारत के प्रधानमंत्री इंद्र कुमार ..... थे।
6. शुद्ध शब्द छांटिए : वायू / वायु।
7. राष्ट्रपति भवन में रहने वाले पहले वायसराय लार्ड ..... थे।
10. मांउट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली सऊदी अरब की पहली महिला ..... मोहर्रक है।
11. जिस देश की राजधानी दोहा है।
12. पानी का एक पर्यायवाची शब्द : नीर / तीर।

ऊपर से नीचे ↓

1. फिरोजाबाद और फिरोजपुर में से जो शहर पंजाब में है।
2. जो पहलवानी करता है, उसे ..... कहते हैं।
3. शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जिसके नाम पर भारत देश का नाम पड़ा।
7. किस देश की राजधानी बगदाद है?
8. भगवान श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का भोजन छोड़कर ..... के घर साग खाया था।
9. 2001 की जनगणना के अनुसार सबसे कम साक्षरता वाला भारतीय राज्य।
10. राजा की पत्नी।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

दीपावली का त्योहार

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

दीपावली का त्योहार,
आ गया है फिर द्वार।
जहाँ देखो वहाँ लगी,
दीपों की उजली कतार।।

घर–घर पटाखे हैं,
हर कहीं फुलझड़ी है।
लगता है उत्सव की बेला,
उल्लास की घड़ी है।।

हर्ष और उल्लास अपार,
दीपावली का त्योहार।

बंदनवार सजीले हैं,
बधाई देते सब मिले हैं।
सबके मुँह मिठाई है,
स्वाद रस घुले मिले हैं।।

देखो तो कैसी चटखार,
दीपावली का त्योहार।

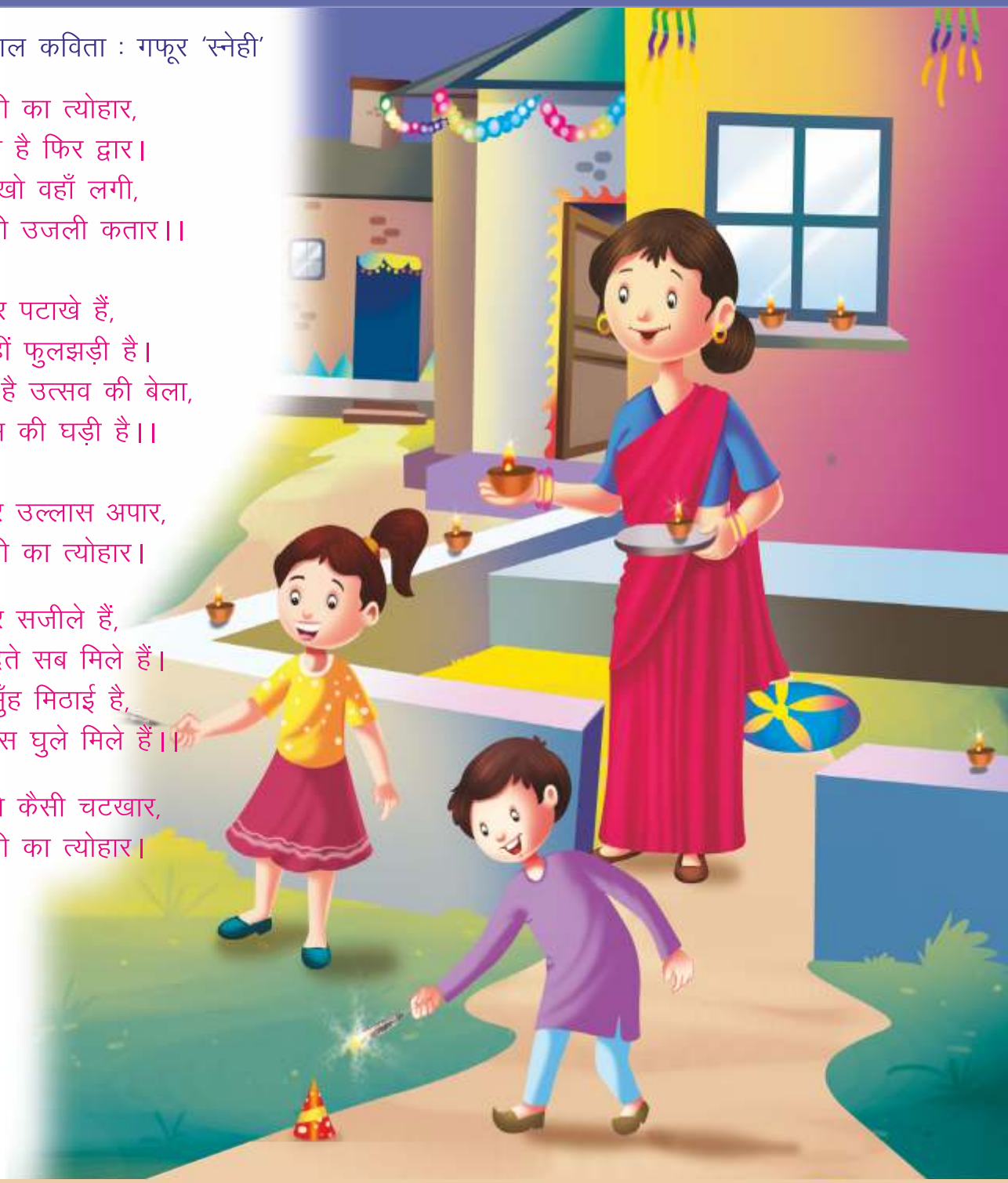

बालकथा : अंकुश्री

रावण जला नहीं है

रामलीला मैदान में खचाखच भीड़ थी। मोना और प्रिंस के साथ उसके पापा एक तरफ खड़े थ। डिम्पी भी अपने पापा क साथ रावण का जलना देखने आयी हुई थी। मेघनाथ और कुम्भकर्ण को जला दिया गया। अन्त में रावण का पुतला भी फट–फटाफट कर जलने लगा।

डिम्पी ने रावण को जलते हुए देखकर पूछा, "पापा, रावण को क्यों जलाया जाता है?"

"रावण राक्षस था। उसमें अनेक बुराइयां थीं।" पापा ने बताया, "मनुष्य में भी बुराइयां होती हैं। हम अपनी और समाज की बुराइयों को समाप्त करने के लिये रावण को जलाते हैं।"

रावण–दहन के साथ ही कार्यक्रम समाप्त हो गया। लोग वापस जाने लगे। धीरे–धीरे जुटी भीड़ एकाएक छंटने लगी।

तभी अचानक जोरों से किसी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। चीख का कारण भीड़ को पता नहीं चल पाया। किसी ने कहा, "हत्या हो गयी।" भीड़ के दूसरे कोने में हल्ला हुआ कि रावण के पटाखे से आग लग गयी है, इसीलिये लोग भाग रहे हैं।

भीड़ का अपना अलग स्वभाव होता है। चीख को सुनकर जितने मुंह उतनी बातें कही जा रही थीं।

हो–हल्ला और भागमभाग में अनेक लोग हताहत हो गये। चप्पल–जूते और साइकिल–सामान तो कितनों के छूट गये। डेढ़–दो घंटे के बाद भीड़ कुछ छंटी। तब जाकर स्थिति शांत हो पायी।

डिम्पी के पापा उसे लेकर एक पेड़ की ओट में खड़े हो गये थे। भीड़ के साथ नहीं बढ़कर पेड़ की ओट में खड़े हो जाने के कारण वे दोनों दबने–पीसने से बच गये थे।

वातावरण शांत होने पर डिम्पी के पापा जब चलने लगे तो डिम्पी ने पूछा, ''सभी लोग क्यों भाग रहे थे?''

''अभी तक लोगों के भागने का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।''

तभी मोना और प्रिंस के साथ उनके पापा भी वहाँ आ गये। वे भी भीड़ के साथ बढ़े नहीं थे। दोनों बच्चों के साथ एक दूसरे पेड़ के पास रूक गये थे। उन्होंने कहा, ''कोई उचक्का एक महिला के कान और गले के गहने खींच रहा था। महिला के चीखने पर गहना खींचने वाले ने चाकू घोंपकर उसे घायल कर दिया है। सुना है उसकी हालत नाजुक है।''

''अरे बाप रे!'' डिम्पी के मुंह से अनायास निकल पड़ा। विस्मय से उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

''पापा! गहना छिनना और हत्या करना बुरा काम नहीं है क्या?'' डिम्पी ने पूछा।

''बिल्कुल बुरा काम है।''

''लेकिन आप तो कह रहे थे कि हम बुराइयों को खत्म करने के लिये रावण को जलाते हैं।'' डिम्पी ने सोचते हुए कहा।

''हाँ बेटी! मगर यही तो अफसोस है।'' पापा ने कहा, ''हम रावण को जलाते जरूर हैं। मगर वह जल नहीं पाता। इसीलिये तो उसे हर साल जलाया जाता है।''

प्रेरक– प्रसंग : गौरीशंकर कुमार

महानता

अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान इंग्लैंड निवासी थॉमस कूपर आठ वर्षों के अपने अथक और कठिन परिश्रम के बाद अंग्रेजी के विशालतम शब्दकोष का लगभग दो तिहाई भाग तैयार कर चुके थे।

एक दिन जब वे घर के बाहर जाने लगे तो उनकी पत्नी ने उन्हें बाजार से लाने योग्य सामान की सूची दी और बोली कि वे सूची की सामग्री अवश्य लेते आयें। किन्तु कूपर को भला घर की सामग्री का ध्यान कहाँ होता?

जब वे शाम को खाली हाथ लौटे, तो उनकी पत्नी क्रोध से बिफर उठी और उनके द्वारा तैयार किये गये शब्दकोष को चूल्हे में झोंक दिया।

जब पत्नी ने अपने कारनामे कूपर को सुनाये तो वे मुस्कुराकर बोले– 'कोई बात नहीं, मैं स्वयं भी शब्दकोष में कुछ संशोधन करने का विचार कर रहा था। हाँ, इतना जरूर है कि अब आठ वर्ष पुनः परिश्रम करना पड़ेगा।

जो हो गया उसे हम बदल तो नहीं सकते। उसको स्वीकार तो करना ही पड़ता है। कोई हँसकर स्वीकार करता है तो कोई रोकर करता है।

ऐसे हुआ एवरेस्ट का नामकरण

जानकारी : विद्या प्रकाश

नेपाल में स्थित नगाधिराज हिमालय की पूर्वी गिरि श्रृंखलाओं के मध्य विश्व का सर्वोच्च पर्वत शिखर माउंट एवरेस्ट शोभायमान है। इसकी ऊँचाई 29,029 फीट यानी लगभग 8,848 मीटर है।

एवरेस्ट के नामकरण की कहानी काफी दिलचस्प है। प्रारम्भ में इसे नेपाली 'सागरमाथा' तथा तिब्बती और चीनी 'चोमोलुंगमा' कहते थे। सन् 1852 में भारत सरकार के एक सर्वेक्षण दल ने संसार के इस सर्वोच्च पर्वत शिखर के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारियां तथा सूचनाएं इकट्ठी कीं। सर्वेक्षण दल के एक बंगाली क्लर्क राधानाथ सिकदर ने इस पर्वत शिखर के सम्बन्ध में तत्कालीन सर्वेक्षण जनरल सरजरी एवरेस्ट को जानकारी दी। सिकदर ने इस पहाड़ी चोटी की ऊँचाई तथा उसकी स्थिति की भी खोजबीन की थी। सिकदर को तो कुछ नहीं मिला लेकिन काफी समय के बाद जब इस चोटी के नामकरण का सवाल पैदा हुआ तो सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर चोटी का नाम रख दिया गया।

शुरुआत में माउंट एवरेस्ट लोगों के लिए जिज्ञासा और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना रहा। सन् 1921 में प्रथम बार इस चोटी तक पहुँचने के लिए इंग्लैंड से एक अनुसंधान दल रवाना हुआ मगर वह मामूली जानकारी ही प्राप्त कर सका। सन् 1922 में एवरेस्ट पर आरोहण की चुनौती स्वीकार की गयी। तत्पश्चात् अनेक बार एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश की गयी मगर असफलता ही हाथ लगी। 29 मई सन् 1953 को पूर्वान्ह साढ़े ग्यारह बजे न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी तथा एक शेरपा तेनजिंग नॉर्गे एवरेस्ट पर आरोहरण में सफल हो गये। इन पर्वतारोहियों का कथन था कि माउंट एवरेस्ट पर विजय पाना कोई हँसी खेल नहीं है। इसके बाद अनेक पर्वतारोही एवरेस्ट पर चढ़कर विजय पताका फहरा चुके हैं।

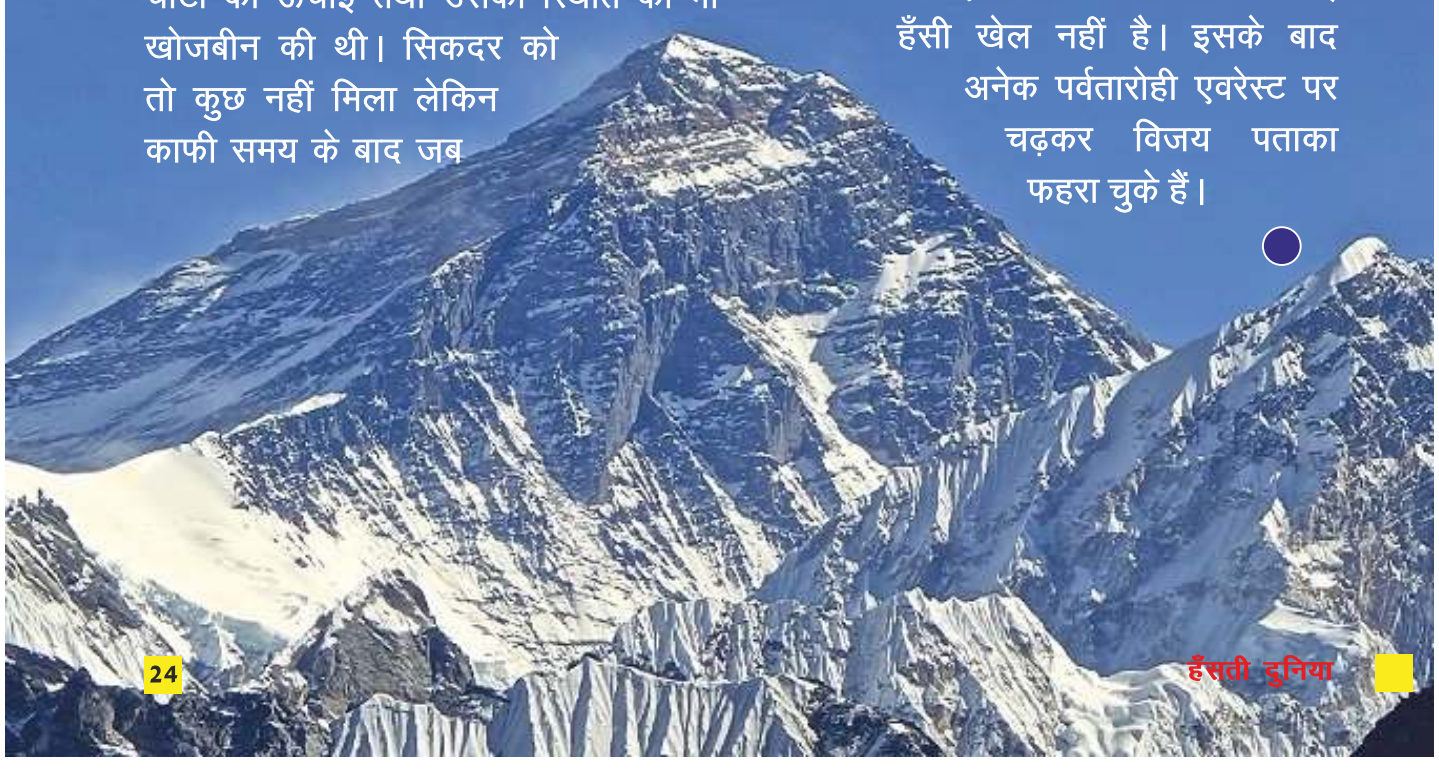

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

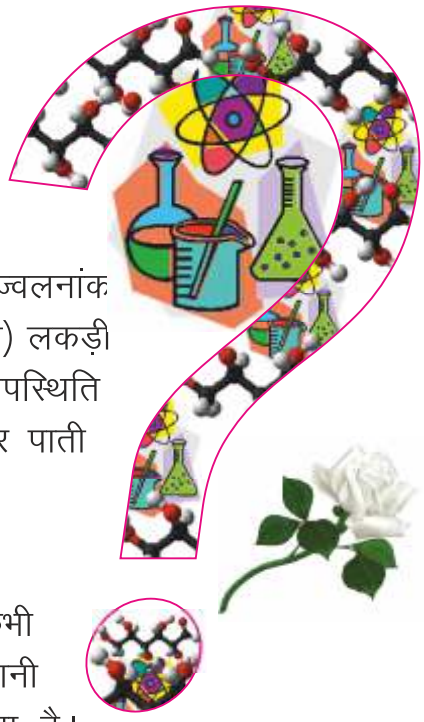

प्रश्न : गीली लकड़ी को जलाना कठिन क्यों होता है?

उत्तर : जलने के लिए तीन अवस्थाएं होती हैं– उचित ज्वलनांक ऑक्सीजन की प्राप्ति एवं वस्तु की प्रकृति। गीली (कच्ची) लकड़ी को जलाना इसलिए कठिन होता है कि पानी की अधिक उपस्थिति के कारण वह आवश्यक ज्वलनांक की प्राप्ति नहीं कर पाती जबकि शेष दोनों जरूरतें तो पूरी हो जाती हैं।

प्रश्न : अधिक ठंड में पानी के पाइप क्यों फट जाते हैं?

उत्तर : सर्दियों में ठंड के कारण तापमान गिर जाता है। कभी–कभी तो जल–आपूर्ति के नलों में भी पानी जम जाता है। जब पानी बर्फ में बदल जाता है तो इसका आयतन बढ़ जाता है। फलस्वरूप, पाइप–लाइन के अन्दर भी आयतन में वृद्धि होती है और दरारें पड़ जाती हैं। इससे नल और पाइप–लाइनें फट जाती हैं।

प्रश्न : बाल्टी में विद्युत–रॉड लगाने पर पूरी बाल्टी का पानी समान रूप से गर्म क्यों नहीं हो पाता है?

उत्तर : पानी में ऊष्मा का स्थानांतरण संवहन विधि से ही होता है। इस विधि में पानी के ठंडे कण भारी होने के कारण ऊष्मा के स्रोत के पास नीचे की ओर आते हैं। ये कण गर्म होकर हल्के हो जाते हैं जिससे ऊपर की ओर उठते हैं। इसी कारण पानी को सदैव नीचे से गर्म किया जाना ही उचित है। किंतु जब बाल्टी में विद्युत–रॉड लगाई जाती है तो पानी के ऊपरी कण गर्म हो जाते हैं जबकि नीचे के कण अपेक्षाकृत कम गर्म होते हैं। फलस्वरूप पूरी बाल्टी का पानी समान रूप से गर्म नहीं होता है।

प्रश्न : बड़ी इमारतों के निर्माण में लोहे और मशीन के बनाने हेतु स्टील का प्रयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर : पानी और हवा के सम्पर्क से लोहे पर जंग लग जाता है तथा उसका क्षय भी होता रहता है। जबकि स्टील को न तो जंग लगता है और न ही उसका क्षय होता है। अतः मशीनें स्टील की बनाई जाती हैं। बड़ी इमारतों में लोहे की छड़ें दीवारों में लगाई जाती हैं। वहाँ पर उनका जल्दी क्षय नहीं होता क्योंकि दीवारों के अन्दर वे हवा और पानी के संपर्क में नहीं आती हैं।

वन्यजीव

वन्य जीव सप्ताह
(अक्टूबर प्रथम) पर विशेष
कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

मानव से पहले धरती पर,
जीव–जन्तु सब आये।
गगन धरा पानी के भीतर,
इस धरती पर छाए।।

कंद मूल फल खाते तो कुछ,
जीव मांसाहारी।
कुछ को जो मिलता खा लेते,
सबकी सबसे यारी।।

मानव भी पहले जीवों सा,
कंद मूल फल खाता।
और कभी करके शिकार वह,
अपनी भूख मिटाता।।

धीरे–धीरे इस मानव ने,
अपना ज्ञान बढ़ाया।
बुद्धि विकास किया फिर उसने,
जाल एक फैलाया।।

मार जीव को जीव हमेशा,
अपनी भूख मिटाता।
लेकिन मानव इन्हें मारकर,
झूठी शान दिखाता।।

और मानव

बात बढ़ी फिर इसके आगे,
गाँव शहर सब आए।
जंगल में रहने वाले सब,
जीव–जन्तु घबराए।।

मित्र वन्यजीवों का मानव,
शत्रु रूप में आया।
बिना विचार किये जंगल का,
करने लगा सफाया।।

धन के लालच में बन बैठा,
जंगल का व्यापारी।
बाघ तेंदुआ सबको मारा,
भ्रष्ट हुई मति सारी।।

प्रकृति हुई नाराज घोर–
संकट मानव पर आया।
सूखा, बाढ़, प्रदूषण भारी,
देख–देख घबराया।।

जब तक जंगल जीव जगत है,
इस धरती पर मानो।
तब तक मानव का जीवन है,
इस सच को पहचानो।।

आलेख : अर्चना सोगानी

रंग-बिरंगे बिच्छू

प्रकृति की गोद में कुछ स्थल ऐसे भी हैं, जहाँ रंग–बिरंगे बिच्छू पाये जाते हैं। संसार भर में इसकी 800 से भी अधिक जातियां पाई जाती हैं। इनमें से 300 जातियां तो कम विष वाली होती है। इस नन्हें प्राणी की कुछ जाति तो ऐसी भी है, जो सिर्फ शाकाहारी है।

आस्ट्रेलिया के जंगलों में नीले व हरे रंग के अनोखे शाकाहारी बिच्छू पाये जाते हैं। ये जंगली पौधों का रस चूसते हैं तथा सूखे वृक्षों की खोखल में रहते है। दक्षिण अमेरिका के पर्वतीय क्षेत्र में केसरिया, लाल व सफेद रंग के ऐसे बिच्छू मिलते हैं। जो रात्रि में अपने समूह में निकलकर कीट पतंगों का शिकार करते हैं, ये बिच्छू घातक जहरीले होते हैं, इनके विष से कई तरह की कीटनाशक दवाओं का निर्माण भी किया जाता है।

आर्कटिक क्षेत्र में हरे, पीले, आसमानी व काले वर्ण के बिच्छू पाये जाते हैं। ये अपनी मादा की अपेक्षा छोटे होते हैं, लेकिन नर की पूंछ लम्बी होती है। वैसे इन रंग–बिरंगे बिच्छूओं का स्पर्श ज्ञान भी काफी विकसित होता है, लेकिन निगाहें बहुत कमजोर होती हैं।

इथियोपियाई में इसकी कुछ बड़ी जातियां भी पाई जाती हैं, जो छोटे चूहे, छिपकली, गिलहरी आदि को भी अपना शिकार बनाती हैं। ये बिच्छू पांच या छः इंच चौड़े व दस से सौलह इंच तक लम्बे होते हैं। वैसे इन्हें कुदरत के अजूबे बिच्छू के नाम से भी जाना जाता है।

बिच्छू की कुछ जातियां तो ऐसी भी है जो उल्लू की तरह दिन में खर्राटे भरती हैं, तथा रात्रि में शिकार पर निकलती हैं। वैसे इसकी घातक विष वाली जातियां दिन में भी अपना शिकार करती हैं।

ध्रुवीय प्रदेश के बिच्छू प्रायः अकेला रहना ही पसन्द करते हैं। कई बार दूसरे बिच्छू का आमना–सामना होने पर आपस में झगड़ना शुरू कर देते हैं, तथा लड़ाई में विजयश्री हासिल करने वाला बिच्छू दूसरे बिच्छू को मारकर खा जाता है।

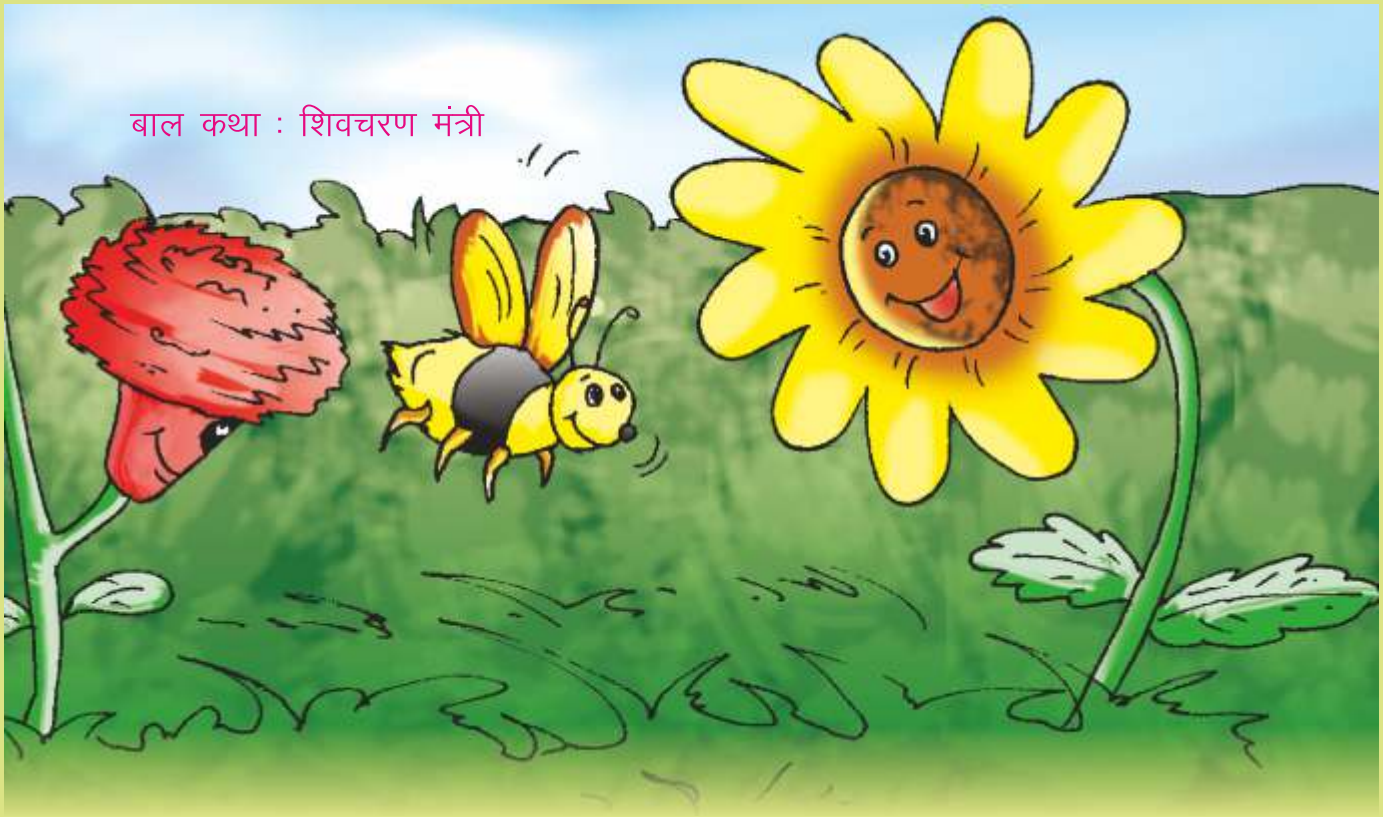

बाल कथा : शिवचरण मंत्री

परोपकारी मधुमक्खी

छोटा–सा बाग। बाग में कई तरह के फूलों के पौधे। सभी पौधे फूलों से लदे थे। गुलाब, जूही, मोगरा, चम्पा, सूरजमुखी आदि के फूलों से सारा बाग महक रहा था। भौंरे, पतंगे, फूलों पर मंडरा रहे थे। कई प्रकार की सुन्दर–सुन्दर रंग–बिरंगी तितलियां फूलों पर मंडरा रही थीं। सारा वातावरण बड़ा ही सुन्दर था। मंद भीनी सुगंध से सारा वातावरण महक रहा था।

इसी समय फूलों की सुगंध लेने एक मधुमक्खी आई। मधुमक्खी उड़ती–उड़ती एक गुलाब के फूल पर बैठने लगी। गुलाब का फूल यह देख कांप उठा। उसने कांपते हुए कहा– ओ! प्यारी मधुमक्खी बहन, मेरी बात सुनो। तुम मुझ पर मत बैठो।

– क्यों क्या हुआ?– मधुमक्खी ने प्रश्न किया।

– तुम मेरी कोमल पंखुड़ियों को अपने डंक से छेद देती हो। इससे मुझे बेहद दर्द होता है।

गुलाब की उक्त बात का पड़ोस के जूही के फूल ने पुष्टि करते हुए कहा– अरे, तुम हमारे फूल का रस भी चूस लेती हो। इससे...

– हाँ, हाँ जूही बहन तुम सही कहती हो। यह मधुमक्खी ऐसा ही करती है। हम पर मत बैठो।– पास के चम्पा ने अपनी बात कही।

– फूलों पर बैठना और फूलों का रस लेना यह तो मेरा स्वभाव रहा है और आप अपना रस अपने परोपकारी स्वभाव के कारण देते रहे हैं। – मधुमक्खी ने कहा।

– बहन, तुम्हारी बात सच है।– मोगरा ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए प्रश्न किया– तुम हमारे रस का क्या करती हो?

– मैं आपसे रस लेकर उसका मधु बनाती हूँ।

– यह क्या होता है मधु? यह कैसे बनता है? और यह क्या काम आता है?– समीप में ताजा निकले सूरजमुखी के फूल ने आश्चर्य से पूछा।

– आपका रस लेकर जब मैं उड़ जाती हूँ तो मेरे शरीर में कुछ रसायनिक क्रियाएं होती हैं और इन्हीं रसायनिक क्रियाओं के कारण मैं मधु निकालती हूँ। इस मधु को मैं अपने छत्ते में एकत्रित करती हूँ। मेरे इस काम में मेरी तरह सैंकड़ों मक्खियां मदद करती हैं। हम सब मिलकर जब मधु छत्ते को मधु से भर देते हैं तो हम उसे स्वतः ही छोड़ देते हैं। हमारे छत्ते को छोड़ते ही मानव उसमें से मधु निकाल लेता है।

– मधु निकालकर मानव इसका क्या करता है? – गेंदे ने जिज्ञासा से प्रश्न किया।

– मधु बड़ा स्वादिष्ट होता है। इसे सभी बड़े चाव से खाते हैं। यह दवा के रूप में भी काम आता है।– मधुमक्खी ने कहा।

– मधु से कौन–कौन से रोगों की दवाएं बनती हैं?– चमेली ने पूछा।

– पेट की बीमारियां यथा भूख न लगना, खांसी–जुकाम, दस्त आदि कई बीमारियों में मधु काम आता है। यह बड़ा शक्तिवर्द्धक होता है।

– ओह! आप तो बड़ी परोपकारी हैं। दूसरों के लिए ही सदा काम करती हैं। कड़ी मेहनत से दूसरों के लिए जीवनभर काम करती हो। – गुलाब ने बड़ी भावुकता से कहा– धन्य हैं, मधुमक्खी। तुम्हें धन्यवाद!

– पर यहाँ खिले सभी फूल भी धन्यवाद के पात्र हैं।– मधुमक्खी ने कहा– क्योंकि आप सभी दूसरों के लिए सुगंध देते हैं। मंद–मंद मुस्कान और मदमस्त सुगंध से मानव मन को तरोताजा रखकर उसे स्वस्थ रखते हुए उसमें नया जोश, उमंग और उत्साह भरते रहते हैं। – इतना कहकर मधुमक्खी ने वहाँ से अपने छत्ते की ओर राह ली।

हास्य–कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

शेखचिल्ली की शेखी

शेखचिल्ली ने शेखी बघारी,
''सुनो यार, एक बात अनोखी।
दुनिया भर की भाषा मैंने,
एक माह में लिखना सीखी।।''

''पढ़ना भले न आता मुझको,
लेकिन उससे होता क्या है?
लिखने जो भी भाषा कहोगे,
झट लिखूंगा, प्रभु की दया है।।''

''अरबी भाषा लिख तो जानूं'',
मित्र जयन्त ने ताना मारा।
टेढ़े–मेढ़े यों ही कुछ लिख,
शेखचिल्ली ने लिया छुटकारा।।

''क्या लिखे, जरा पढ़ो तो सखा'',
जयन्त ने पीछा नहीं छोड़ा।

पहले ही कह दिया है मैंने,
शेखचिल्ली ने बात यों जोड़ा।।
''लिखना भर सीखी है मैंने,
सो मैंने लिख दी तुरन्त।
पढ़ना तो सीखा ही नहीं है,
फिर क्यों पढ़ने कहते जयन्त?''

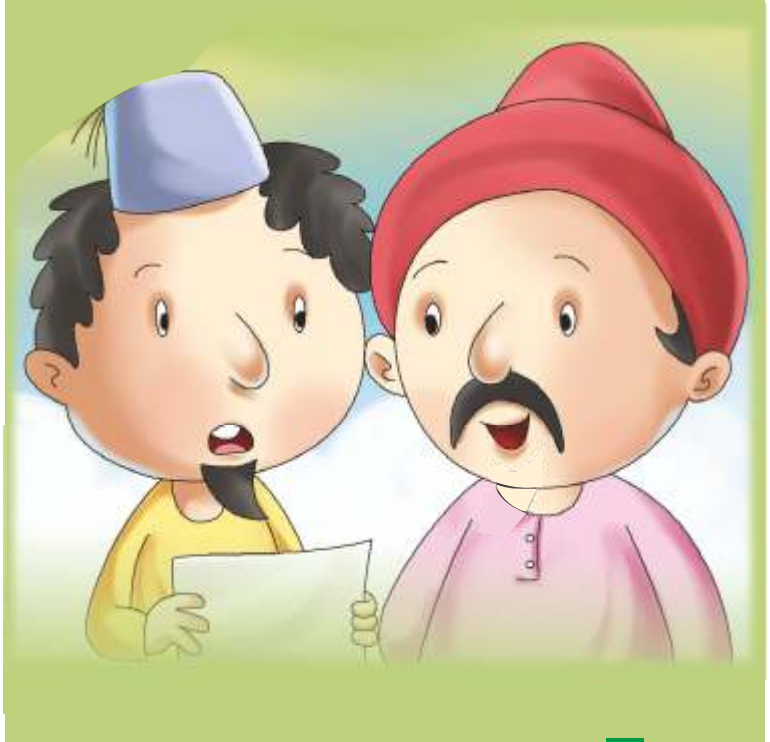

किशन और मंजरी

कहानी : बुशरा अलवेरा

एक गाँव था– सूरजगढ़। उस गाँव के बड़े–बूढ़ों का कहना था, यहाँ लम्बे समय तक सूर्यवंशी राजाओं की कई पीढ़ियों ने निवास किया। यहाँ प्राचीन काल की अनेक इमारतें अब खण्डहर हो चुकी थीं। गाँव के किनारे से एक नदी होकर जाती थी।

इस गाँव में किशन और मंजरी नाम के दो भाई–बहन रहते थे। दोनों की बहादुरी के चर्चे दूर–दूर तक मशहूर थे। पिताजी एक अच्छे तैराक थे, सो उनके बच्चे कैसे पीछे रह जाते? दोनों ने ही तैरने में महारत हासिल कर ली थी।

एक बार उन्होंने डूबते बच्चे को बचाया तो उन्हें स्कूल की ओर से वीरता पुरस्कार प्राप्त हुआ।

गाँववासी व्यवहारिक और संस्कृतिवान थे परन्तु इधर कुछ समय से यहाँ के नवयुवकों पर नशे की लत जैसी बुरी आदतों का नशा सिर चढ़कर बोल रहा था।

न जाने क्यों गाँव का माहौल धीरे–धीरे बिगड़ता जा रहा था। अब तो गाँव में चोरियां भी होने लगी थीं।

लेकिन एक दिन तो हद हो गई। गाँव के सबसे धनी व्यक्ति लाला चम्पतलाल जी के घर से लाखों के गहने गायब हो गये।

सेठ जी बड़े ही दयालु व्यक्ति थे। कभी भी किसी की सहायता करने से मना नहीं करते थे। सेठ जी के घर चोरी होने से गाँव के बड़े–बूढ़ों को भी बड़ा दुःख हुआ।

प्रधान ने गाँव के हालात को बिगड़ता देख एक सभा बुलाई। सभा में सेठ जी भी आमंत्रित थे। प्रधान ने गाँववालों और सेठ जी को ढांढ़स बंधाते हुए कहा– अब पानी सिर से ऊँचा हो गया है। मुझे तो लग रहा था कि कुछ दिनों में सब ठीक हो जायेगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। अब हम सबको मिलकर चोरों को पकड़ना होगा।

किशन और मंजरी भी उसी सभा में किनारे खड़े प्रधान की बातें सुन रहे थे। किशन ने मंजरी

से कहा– मंजू, ऐसा भी तो हो सकता है कि नशे का सामान गाँव में फैलाने वाले लोग और चोरी करने वाले लोग एक ही समूह के सदस्य हों।

मंजरी ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट करते हुए कहा– हाँ, अगर ऐसा हुआ भैया, तो एक तीर से दो शिकार हो जाएंगे।

एक दिन किशन और मंजरी नदी के पास आम के बाग में खेल रहे थे। दोनों ने दौड़ लगाने की सोची। दौड़ते–दौड़ते वे दोनों नदी के किनारे जा पहुँचे। अचानक उन्होंने नदी के किनारे खण्डहर पड़ी हवेली में आग जलती देखी। यह हवेली सूरजसिंह की थी। बहुत साल पहले वह गाँव छोड़कर शहर चले गये थे। तब से यह सुनसान हवेली के नाम से जानी जाती थी।

किशन ने सोचा चलकर देखना चाहिए कि माजरा क्या है?

जब किशन उस हवेली के पास पहुँचा तो उसने अन्दर कुछ लोगों को आग के चारों तरफ बैठकर बातें करते देखा।

दोनों एक कोने में छिपकर उनकी बातें सुनने लगे। एक आदमी ने कहा– गाँव वाले अब सचेत हो गये हैं और चोर की तलाश कर रहे हैं। बेहतर होगा कि हम यह जगह छोड़ दें।

दूसरा बोला– हाँ, यही ठीक रहेगा।

तभी किशन की नजर उस व्यक्ति पर पड़ी जिसने लम्बी–लम्बी जटाएं और दाढ़ी बढ़ा रखी थी।

वह तुरन्त वापस मुड़ा और मंजरी को साथ लेकर बाहर आ गया। वह तुरन्त प्रधान के पास आया और सारी बात बता दी।

प्रधान ने सारी बातों को सुनकर गाँववालों की सहायता से हवेली को चारों तरफ से घेर लिया और पुलिस को सूचना दे दी।

मौके पर पुलिस ने पहुँचकर चोरों को पकड़ लिया।

इस प्रकार किशन और मंजरी की होशियारी के कारण सेठ जी के गहने वापस मिल गये और साथ ही नशे का काला धन्धा करने वाले भी पकड़े गये।

अब गाँव में चारों तरफ किशन और मंजरी की प्रशंसा हो रही थी।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

आज तो मैं सबसे पहले अपना होमवर्क करूंगा, फिर खाना खाऊंगा।

हाँ-हाँ, आज मैं भी पहले अपना होमवर्क करूंगी, फिर खाना खाऊंगी।

अरे वाह! कल तो टीचर जी मुझे शाबाशी देगी!

अच्छा, किट्टी मेरी होड़ कर रही है। मैं तो आज ये कहानियों की किताब पूरी पढ़ लूंगा।

ओह, ये तो बड़ा आसान है। मैं भी कहानियों की किताब पूरी पढ़ लूंगी।

आज तो मैं अपना पूरा घर साफ करूंगा और उसके बाद आराम करूंगा।

हाँ मैं भी अपना पूरा घर साफ कर सकती हूँ।

मेरा घर तो साफ हो गया। मैं तो चला सोने।

हं, हं! चिंटू की नकल करते-करते मैं तो थक गई, उसका घर तो छोटा सा हैं, पर मेरा घर तो बड़ा है।
हं हं! मेरे तो हाथ पैर ही दर्द करने लगे। मैंने तो बहुत बड़ी गलती कर दी जो मैं चिंटू की नकल करने लगी। अब समझ मे आया कि नकल के लिए भी अक्ल होनी चाहिए।

जानकारी : विभा वर्मा

समुद्र के भीतर भी पर्वत

प्राचीन काल में यह माना जाता था कि समुद्र का तल समतल होता है। लेकिन ज्यों–ज्यों विज्ञान प्रगति कर रहा है, त्यों–त्यों अनेक रहस्यों का पर्दा उठता जा रहा है। समुद्रों के गहन अन्वेषण के बाद यह पता लगा कि समुद्र के भीतर भी विशाल पर्वत श्रृंखलाएं होती हैं।

समुद्र की गहराईयों का अध्ययन सर्वप्रथम सन् 1934 में किया गया था। सर विलियम वेइव नामक एक प्रकृति विज्ञानी 3208 फुट की गहराई में समुद्र के भीतर उतरा था। जो उस समय एक हैरतअंगेज साहसिक कार्य था। उसके बाद अनेक वैज्ञानिकों ने समुद्र के भीतर अनेक पर्वत श्रृंखलाओं की खोज की।

बच्चों! तुमको जानकर आश्चर्य होगा कि समुद्र के भीतर एक पर्वत श्रृंखला की ऊँचाई तो 36198 फुट तक है साथ ही अटलांटिक सागर में प्यूर्टो रिको के निकट तो एक पर्वत चोटी की ऊँचाई समुद्र तल से 38374 फुट है। अब तो तुम स्वयं ही अन्दाजा लगाओ कि जब पर्वत इतना ऊँचा है तो इन समुद्रों की गहराई कितनी ज्यादा होगी।

गाँधी जी के तीन बन्दर

बाल गीत : डॉ. ममता खत्री

दम दमा दम मस्त कलन्दर,
हम हैं गाँधी जी के बन्दर।
हम में अच्छे–अच्छे गुण हैं,
नहीं किसी से भी हम कम हैं।

मैंने घूमी दुनिया सारी,
चाहूंओर है मारा–मारी।
लेकिन मैं तो अच्छा देखूं,
अच्छी–अच्छी बातें सीखूं।
बुरी चीज मैं नहीं देखता,
मैं बापू को प्यारा लगता।

मैं भी घूमा दुनिया सारी,
कहीं मौज़ तो कहीं लाचारी।
बुरी बात मैं नहीं बोलता,
सोच समझ कर मुंह को खोलता।
बुरा न बोलो मेरा नारा,
इसीलिए बापू का प्यारा।

मैं भी दुनिया घूमा करता,
तरह–तरह की बातें सुनता।
लेकिन बापू ने सिखलाया,
जीवन का इक मंत्र बताया।
बुरी बात पर कान न धरना,
दुख ही दुख पाओगे वरना।

तुम भी यह सब बातें सीखो,
बुरा कहो, ना सुनो, ना देखो।
यदि मंत्र यह अपना लोगे,
तो सबके प्रिय बन जाओगे।

अन्न की नसीहत

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

सामने स्टॉल पर अपनी खुश्बू से लोगो की लार टपकाते हुए विविध प्रकार के व्यंजन सजे हुए थे कि वयस्क लोग भी नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे फिर संदर्भ तो किशोरवय था। कैसे अपनी जीभ पर नियंत्रण रख पाता इसलिए उसने भी आननफानन में अपनी प्लेट को लबालब भर लिया। दोनों हाथों से संभालते हुए वह आगे बढ़ रहा था कि अंकुश से टकरा गया। अंकुश की नजर संदर्भ की प्लेट पर पड़ी तो व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ वह बोला– ''वाह यार तुमने अपनी प्लेट को इस तरह ठूंस–ठूंस कर भर लिया है कि सांस लेने की जगह भी नहीं छोड़ी, ऐसी ही कहीं अपने पेट की हालत मत कर लेना।''

संदर्भ को अच्छा नहीं लगा, दूसरों की थाली पर नजर रखना अच्छी बात नहीं। वह चिढ़ते हुए बोला– ''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि शादी–ब्याह की पार्टी का खाना वैसे ही गरिष्ठ और अधिक कैलोरी वाला होता है इसलिए थोड़ा अपने पेट पर रहम करना मेरे यार।''

सलाह अच्छी और समयानुकूल थी पर संदर्भ को चुभ गई, बड़ा आया हमदर्दी दिखाने वाला? प्रत्यक्ष में वह खिसियाते हुए बोला– ''नहीं इतना सारा खाना मैं अपने अकेले के लिए थोड़े ही ले जा रहा हूँ, छोटा भाई भी इसी में खाएगा।''

अंकुश चला गया तो संदर्भ भुनभना उठा– अपनी प्लेट देखेंगे नहीं हमेशा दूसरों की प्लेट पर नजर रखेंगे। हमें खाने के लिए बुलाया है तो कितना भी खाएं, किसी के बाप का क्या बिगड़ता है? भारी भरकम गिफ्ट भी तो हमें देना पड़ता है।

दरअसल संदर्भ ने सोचा था, भीड़ में बार–बार खाना लेने टेबल–दर–टेबल भटकना पड़ेगा इसलिए एक बार में ही क्यों ना सबकुछ समेट लूं। 'बूफे' पद्धति में यही तो खासियत है कि अपनी मर्जी से चाहे जितना भर लो, कोई रोकने–बोलने वाला नहीं। छोटे भाई का तो खाली बहाना था।

जब खाना खाते हुए संदर्भ का पेट भर गया और जरा भी जगह नहीं बची, तब तक प्लेट भी आधी खाली नहीं हुई थी। उसे संकोच होने लगा कि आधी से ज्यादा भरी प्लेट को कैसे कूड़ेदान में डाले, वह भी सबके सामने? कोई देखेगा तो क्या कहेगा? किसी तरह वह सबकी नजर बचाकर थोड़ी दूर पर रखी 'डस्टबिन' के पास पहुँचा और प्लेट डालने का मौका तलाश रहा था कि

अचानक प्लेट में रखी पूड़ी ने टोक दिया– ''अरे मैं क्या अछूत हूँ या मुझे नहीं छूने की कसम खा रखी है, ऐसा था तो अपनी प्लेट में हमें सजाया क्यों?

''नहीं ऐसी बात नहीं। पर वह क्या है कि पूड़ियां तो घर पर भी जब चाहे खाते रहते हैं इसलिए दूसरी चीजें खाने का मन हो आया। अब अंट–शंट चीजों में ही इतना पेट भर गया कि तुम्हें खाने की इच्छा नहीं हुई।'' संदर्भ ने खिसियाते हुए सफाई देना चाहा। उसे अच्छा नहीं लग रहा था। दोस्त तो दोस्त प्लेट के व्यंजन भी सवाल करने लगे थे।

''भले मानुष तुमने कुल चार पूड़ियां उठाई थीं पर एक को भी हाथ नहीं लगाया, अब यूंही कचरे में फेंक दोगे क्या? सोचो इन चार पूड़ियों से किसी एक भूखे बच्चे का पेट भर गया होता?''
– पूड़ी ने उलाहना दिया।

यद्यपि पूड़ी की नसीहत उसे नागवार गुजरी फिर भी बात खत्म करने की गरज से उसने कहा– ''गलती हो गई पूड़ी रानी।''

पूड़ी गुर्राते हुए बोली– ''मुझे तो पूरा खाना पड़ेगा, कचरापेटी में जाकर मैं अपनी मिट्टी–पलीद नहीं कराना चाहती।''

क्या करे, संदर्भ को समझ नहीं आ रहा था। एक बार उसका मन हुआ कि जल्दी से इन पूड़ियों को निबटाकर बात खत्म करे... पर दूसरी अन्य चीजें भी प्लेट में रखी हुई हैं। उसने हठधर्मिता अपनाते हुए प्लेट को कचरापेटी में फेंकने का विचार पक्का कर लिया। तभी उसके कान में आवाज आई– ''और बच्चे मुझे किस खुशी में कचरे की भेंट चढ़ाने जा रहे हो?''

संदर्भ चौंक गया, अब यह कौन टपक पड़ा? देखा तो प्लेट की भीड़ में दबा गोलमटोल गुलाबजामुन कसमसा रहा था।

संदर्भ ने जवाब दिया– ''मैंने दो गुलाबजामुन खा लिए।''

''जब दो ही खाने थे मेरे भाई तो आधा दर्जन क्यों प्लेट में भर लिए। जीभ पर कंट्रोल नहीं कर सकते थे?''
– गुलाबजामुन ने आक्रोश व्यक्त किया।

''यार मैं कितना तुम्हें खाता, दूसरी चीजें भी थी खाने के लिए''– संदर्भ ने बचाव में तर्क दिया।

''यह तो परोसने से पहले सोचना था, अब लिया है तो खाना पड़ेगा वर्ना....'' –गुलाबजामुन ने तीखी धौंस दी।

''माफ कर दो भाईयों आइंदा ऐसी गलती नहीं करूंगा।''– संदर्भ ने माफी चाही।

''हमारी डिक्शनरी में माफी शब्द नहीं होता''– गुलाबजामुन ने अकड़ते हुए कहा। संदर्भ को गुस्सा आ गया....दूसरे अन्य व्यंजन आंखें दिखाएं उसके पहले वह प्लेट 'डस्टबिन' में रख देना चाहता था।

''हम सब्जियों से उपवास रखना था तो क्यों भर लिया प्लेट में?''– मटर पनीर की सब्जी ने इल्जाम लगाया।'' हाँ यार देखो ना मुझे भी सबके साथ गड्डम–गड्डम कर दिया है और चखा तक नहीं''– आलू–बैंगन की सब्जी बोली। ''और मुझे तो शायद प्लेट की शोभा बढ़ाने के लिए रखा था।''– कटोरी की दाल ने कटाक्ष किया।

''मैंने सबको चख लिया है बस इससे ज्यादा मैं खा नहीं सकता अन्न–देवताओं''– संदर्भ भड़क गया।

''चखना ही था तो इतना भर–भर क्यों परोस लिया हमें।'' सब्जी ने आरोप लगाया। ''याद रखना अगर हमें फेंकने की कोशिश की तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा। हम कचरे में मिलकर अपना जीवन निरर्थक नहीं करना चाहते।'' दाल ने धौंस दी।

''अरे भैया, मैं चुप बैठा हूँ तो इसका मतलब यह नहीं कि मुझे गुस्सा नहीं आ रहा।'' एक और आवाज आई तो संदर्भ चौंक उठा– ''यह कौन बोला?''

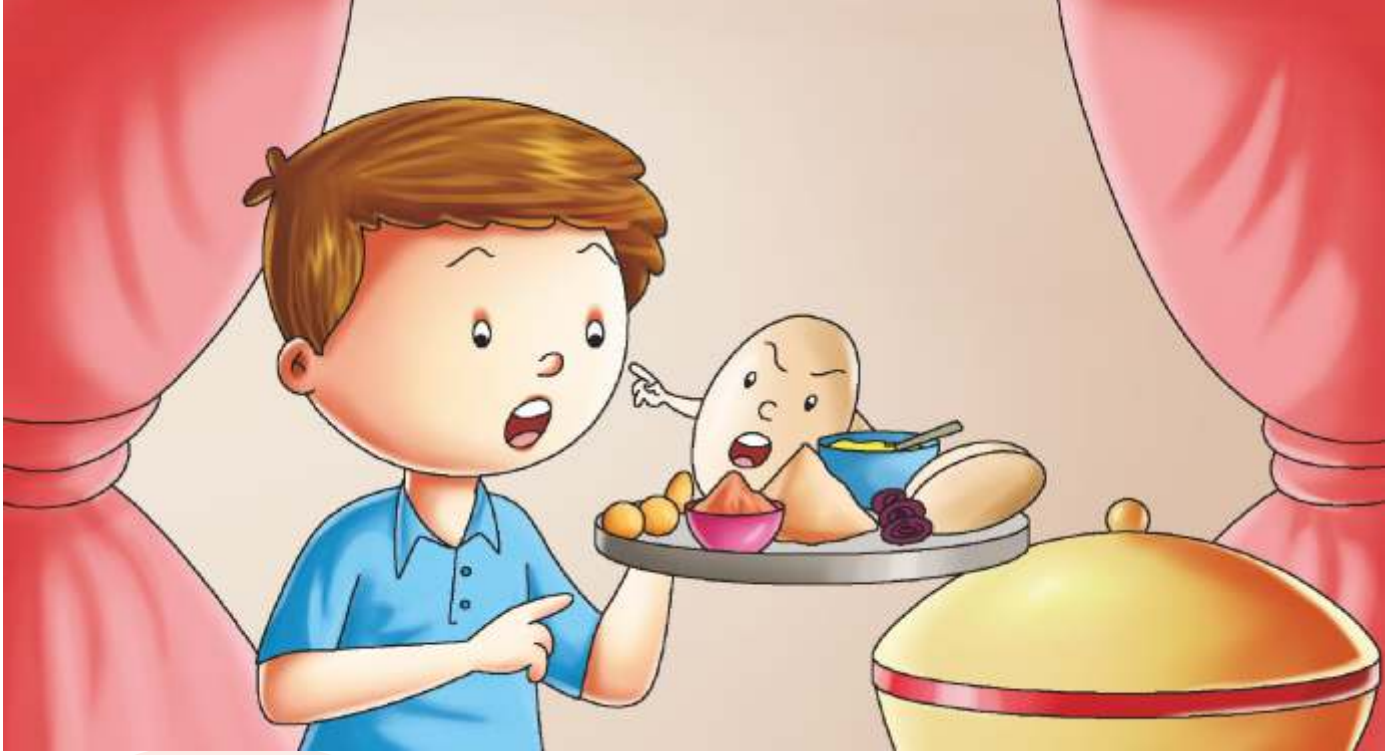

''मैं गाजर का हलुआ हूँ मेरी शिकायत गलत है क्या?''– चिढ़ते हुए गाजर के हलुए ने सवाल किया।

''और मेरी खुश्बू तो देखो, देखने वालों की भूख जवान हो जाए और तुमने मुझे झूठा कर यूंही लावारिस छोड़ दिया, पता है कितना महँगा हूँ मैं''– बासमती चावल ने आँखें तरेरी।

''और सलाद तो शायद प्लेट की खुबसूरती बढ़ाने के लिए ली जाती है''– सलाद ने ताना कसा।

संदर्भ खामोश हो गया, जवाब देते हुए थक चुका था। चारों तरफ से हमले जारी थे। कचौरी भला कैसे चुप रहती, अपने तेवर दिखाते बोली– ''मुझे क्यों रख लिया जब खाना नहीं था तो?''

चौतरफे हमले से घबराए संदर्भ ने समर्पण करना उचित समझा। उसने नम्रतापूर्वक कहा, ''तुम सबका स्वाद इतना बेहतरीन लजीज है कि.. .. सच पूछो तो अगर मैं तुम सबको खा लेने की सोचूं तो पता है मेरे पेट का हश्र क्या होगा? वह गुब्बारे–सा फूट जाएगा। वह गोदाम थोड़े ही है कि सब कुछ ठूंसते जाओ।''– संदर्भ बोला।

''हम सबको कूड़े–कचरे के हवाले करोगे तो हमारा क्या हाल होगा यह सोचा है कभी?'' बहुत देर से खामोश पड़ी पूड़ी बोली।

''क्या होगा? कहा ना मुझे माफ कर दो''– रूआसे स्वर में संदर्भ ने कहा। ''पता है तुम्हारी प्लेट में इतना सारा खाना बचा है कि इससे दो वयस्क आदमियों का पेट भर जाए।'' सब्जी ने आँखें दिखाते कहा।

''मालूम है तुम सरीखे लापरवाह, गैर जिम्मेदार लोगों की वजह से हमारे अकेले शहर के होटलों और पार्टियों में कितना खाना बर्बाद हो रहा है?''– गुलाबजामुन ने गरजरते हुए सवाल किया।

''नहीं मालूम!'' कहते हुए संदर्भ ने गर्दन लटका ली।

''हमारे अकेले 25 लाख जनसंख्या वाले शहर में प्रतिदिन 5000 किलो खाना बर्बाद हो रहा है जिसे हम जूठन के रूप में छोड़ देते हैं। इतने खाने का अगर सदुपयोग किया जाए तो छः हजार लोगों का पेट भर सकता है। एक आदमी कितना खा सकता है....ज्यादा से ज्यादा आधा–पौन किलो''– गाजर के हलुए ने आंकड़े पेश किए।

''और इस तरह तुम्हारे जैसे लालची, भुक्खड़ लोग साल भर में 6 करोड़ रू का अन्न बर्बाद कर देते हैं''– सलाद ने आँखें तरेरी।

''यानि एक आदमी जो भोजन अपनी प्लेट में भरता है या होटल में ऑर्डर करता है तो औसतन 25 फीसदी खाना व्यर्थ कर देता है जूठन के रूप में छोड़कर।''– चावल ने हकीकत बताई। संदर्भ क्या कहता चुपचाप सुनता रहा क्योंकि आरोप निराधार नहीं थे।

''क्या बचपन में तुम्हें सीख नहीं मिली कि अगर अन्न का एक दाना भी जमीन पर गिरा तो ऊपर जाकर हमें पलकों से उठाना पड़ेगा। घर में तो हम यह शिक्षा मान भी लेते हैं मगर बाहर होटल या शादी पार्टी में जाकर भूल जाते हैं''– पूड़ी ने कहा।

''कितनी बार कहूँ माफ कर दो आगे से कभी ऐसी गलती नहीं दोहराऊँगा।''– हताश हो संदर्भ ने फिर कहा।

''कैसे माफ कर दें, हमारा देश गरीबों का देश है, लाखों लोगों को अब भी दो जून भरपेट भोजन नहीं मिलता और वे भूखे सोने को मजबूर हो जाते हैं और दूसरी तरफ तुम जैसे बिगड़ैल बच्चे हैं जो इतना अनाज बर्बाद कर देते हैं.....उसके बाद भी चेहरे पर शिकन तक नहीं लाते।''– सब्जी गुर्राई।

''मैं बहुत देर से तुम्हारी जलीकटी बातें सुनता जा रहा हूँ इसका अर्थ यह नहीं कि.... आखिर तुम होते कौन हो इस तरह के सवाल करने वाले?''– संदर्भ ने तेवर बदलते हुए कहा।

''हम... हम जीवनदाता है''– सभी व्यंजनों ने एक स्वर में कहा।

''अच्छा मुझे क्या करना चाहिए कि तुम्हारा गुस्सा खत्म हो जाए।'' संदर्भ को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

''यह कसम खाओ कि कभी किसी व्यंजन को जूठा नहीं छोड़ोगे, जितनी आवश्यकता होगी उतना ही परोसोगे।''– सलाद ने हिदायत दी।

''ठीक है आगे से पूरा ख्याल रखूंगा पर अभी तो माफ कर दो।''– संदर्भ ने फिर कहा।

''नहीं अभी तुम्हें पूरी प्लेट साफ करना ही पड़ेगा नहीं तो हम तुम्हें जाने नहीं देंगे।''– दाल ने सबकी तरफ से चेतावनी दी।

संदर्भ के सब्र का बांध टूटने लगा। अतः अकड़ते हुए बोला– ''क्या कर लोगे?''

''हम जबरदस्ती तुम्हारे मुँह में प्रवेश करने लगेंगे एक के बाद एक....यह देखो।''– कहते हुए सारा बचा हुआ भोजन संदर्भ के मुँह की तरफ तेजी से अग्रसर होने लगा।

यह इंतिहा थी, संदर्भ जोर से चीख पड़ा– ''बचाओ, बचाओ मम्मी...''

''क्या हो गया बेटे दिन में ही सपना देखने लगे।''– दौड़ते हुए मम्मी आई और पूछने लगी। आँखें खोलकर संदर्भ टुकुर–टुकुर यहाँ वहाँ देखने लगा। उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलछलाने लगीं।

''चल उठ तैयार हो जा, अभी कुछ देर बाद शादी की पार्टी में चलना है।'' मम्मी ने याद दिलाया।

''मम्मी मैं नहीं जाऊँगा।'' संदर्भ के मुँह से निकल गया।

''ऐं... यह क्या बोल रहा है?'' मम्मी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

''ठीक है मम्मी मैं चलूँगा मगर वहाँ जाकर थोड़ा–सा खाना अपनी प्लेट में परोसूंगा। प्लेट में खाना छोड़ना गंदी बात है इसलिए जितना लगेगा उतना ही लूँगा, डस्टबिन में बिल्कुल नहीं फेंकूगा।'' संदर्भ कहे जा रहा था और मम्मी उसकी तरफ अविश्वसनीय नजरों से देखते हुए मुस्कुरा रही थी। हमेशा प्लेट में ढेर सारी खाद्य सामग्री छोड़ने वाले संदर्भ को यकायक क्या हो गया था.... कैसे उसकी मति फिर गई थी? जबकि मम्मी हमेशा समझाती थी और वह एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दिया करता था.... पर आज उसकी बातों में वजन था। ●

पढ़ो और हँसो

एक ग्रामीण रेड लाइट क्रॉस करता पकड़ लिया...

पुलिसवाला : क्यूं तनै लाल बत्ती ना दिखी के?

ग्रामीण : बत्ती तो दिखी थी पर तू ना दिखा, कित लुक रहा था भाई!

★ ★ ★

संता : तुम कितने साल से जलेबी बना रहे हो?

हलवाई : 30 साल से।

संता : बड़ी शर्म की बात है। तुम से आज तक जलेबी सीधी नहीं बनी।

★ ★ ★

पति एक सप्ताह के लिए शहर से बाहर जाने वाला था। उसने पत्नी को समझाया– देखो, जो भी चिट्ठी आए उस पर लिख देना कि वह कब आई।

पत्नी : आप चिन्ता न करें। जब पति वापस आया और डाक देखने लगा तो हर चिट्ठी पर लिख था – आज आई।

★ ★ ★

मैनेजर : (आनन्द से) हमें इस पद के लिए किसी जिम्मेदार व्यक्ति की तलाश है।

आनन्द : तब तो मैं इस पद के लिए पूरी तरह फिट हूँ।

मैनेजर : वह कैसे?

आनन्द : क्योंकि हर जगह मुझे ही गलती के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

दूधवाला : (अपने बेटे से) बेटा, कभी झूठ न बोलना।

बेटा : अगर कोई मुझे दूध में पानी मिलाने के बारे में पूछे तो?

दूधवाला : कह दो नहीं मिलाया।

बेटा : लेकिन हम तो मिलाते हैं।

दूधवाला : हम तो पानी में दूध मिलाते हैं, दूध में पानी कहाँ मिलाते हैं?

★ ★ ★

आनन्द : (राजेश से) यार! रातभर नींद नहीं आती।

राजेश : तुम घर के सभी दरवाजे और खिड़कियां बन्द करके सोते हो तो नींद कहाँ से आएगी?

★ ★ ★

मैनेजर : जब तुम्हें नौकरी पर रखा गया था, तब तुमने कहा था कि तुम कभी नहीं थकते और अभी–अभी तुम मेज पर टांगे पसारे सो रहे थे।

विजय : साहब! मेरे न थकने का यही तो राज है।

★ ★ ★

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी गाँव में निरीक्षण करने गये तो गाँव के सरपंच से पूछा– आपके गाँव के लोगों की मृत्यु दर क्या है?

सरपंच बोला– शत्–प्रतिशत!

अधिकारी हैरान होकर बोला– वह कैसे?

सरपंच ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया– वह ऐसे कि इस गाँव में पैदा होने वाला हर व्यक्ति एक न एक दिन अवश्य मर जाता है।

एक मोटे आदमी ने मोटापे से तंग आकर पांचवी मंजिल से छलांग लगा दी। अगले दिन उसे अस्पताल में होश आया तो पूछने लगा– मैं जिन्दा कैसे बच गया?

डॉक्टर ने गहरी सांस लेते हुए कहा– आप तो बच गये परन्तु जिन तीन आदमियों के ऊपर आप गिरे थे वे नहीं बच सके।

★ ★ ★

एक व्यक्ति लाइब्रेरियन के पास गया और बोला– पिछले हफ्ते मैं जो पुस्तक आप से ले गया था बहुत बोरिंग निकली। उसमें कोई ढंग की कहानी नहीं थी, बस केवल पात्रों के नामों की ही भरमार थी।

लाइब्रेरियन : अच्छा तो आप वही सज्जन हैं जो पिछले हफ्ते हमारी टेलिफोन डायरेक्टरी ले गये थे।

★ ★ ★

नानी : शारदा तुम बहुत शैतान हो।

शारदा : नानी जी, जरा आहिस्ता बोलिए।

नानी : क्यों भला?

शारदा : अगर किसी ने सुन लिया तो आपको शैतान की नानी कहेगा।

★ ★ ★

इंजीनिरिंग का फार्म भरते हुए छात्र ने पास खड़े चौकीदार से पूछा– कैसा है ये कालेज?

चौकीदार : बहुत बढ़िया है, हमने भी यहीं से इंजीनिरिंग की है।

एक कम पढ़ा–लिखा युवक अंग्रेजी भाषा का पूरा ज्ञान होने का दावा करता था। एक बार वह अपने ससुराल गया। उसकी सास बातें करते–करते बेहोश हो गई।

डॉक्टर ने उससे पूछा– इनको क्या हुआ है?

युवक बोला– कुछ समझ में नहीं आया सर, थोड़ी देर पहले माता जी एकदम 'सैंस' में थी, पता नहीं अचानक कैसे 'नॉनसैंस' हो गई।

★ ★ ★

किसी के घर आया मेहमान वापस जाने का नाम नहीं ले रहा था। घर वाले उसे चलता करना चाहते थे। सो उन्होंने उसे रोजाना दाल खिलानी शुरू कर दी। मेहमान दाल खाकर तंग आ गया।

एक दिन मेहमान और मेजबान घर के लॉन में बातें कर रहे थे कि मेजबान ने मेहमान से पूछा– आज कितनी तारीख है?

मेहमान बोला– सरकारी तारीख का तो पता नहीं, पर आज दाल की 28वीं तारीख है।

– गुरचरण आनन्द
(लुधियाना)

जन्म दिन मुबारक

आयुष (दारोसलम)

असीमा (गाजियाबाद)

अद्वैत (मुम्बरा)

अनुकम्पा (करूक्षेत्र)

साधिक (दिल्ली)

मिताली (नांदुरा)

अश्विन (दिल्ली)

ऋद्धि (परिया)

काशवी (दिल्ली)

अनुराग (भगीरथपुर)

अनीष (बीर तुंगल)

आदित्य (गोपेश्वर)

सुहानी (गाँधी नगर)

वेधा (दिल्ली)

तरेश (करमाला)

मीत (ग्वालियर)

रुचिता (अमलनेर)

साहिल (पंडोरी)

अक्षत (नवां शहर)

सुदिक्षा (इन्दौर)

सक्षम (जीरा)

नवनीत (हिसार)

मन्नत (अमृतसर)

हनी (कोल्हापुर)

दिलप्रीत (लखनौरा)

तरुण (कक्कड़ माजरा)

आहिलप्रीत (सरहिन्द मण्डी)

शिवानी (मुंबई)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

आपके पत्र मिले

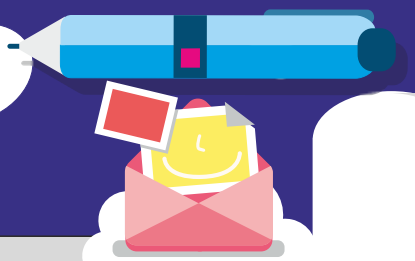

बच्चों की प्यारी 'हँसती दुनिया'

'हँसती दुनिया', हँसती दुनिया,
हमें बहुत कुछ सिखलाती है।
बच्चों की ये प्यारी दुनिया,
सबका मन मोह ले जाती है।
'सबसे पहले' लेख से,
जीने का ढंग बतलाती है।
संतों के 'अनमोल वचन',
जीवन में लाते सुन्दर रंग।
सुनाकर हमें इक 'बोधकथा',
हृदय में बनाती हमारे यह जगह अथाह।
अब आकर 'प्रेरक प्रसंग',
जीवन में भरते नयी उमंग।
देखकर एलबम 'जन्मदिन मुबारक',
बच्चे ढूँढ़ते अपना भी फोटो भैया दीपक।
पढ़कर फिर 'बाल कहानी',
याद आती है मुझको दादी, नानी।
तत्पश्चात आया कालम 'समाचार',
देश दुनिया की खबरों से करता आँखें चार।
अब बारी है 'वर्ग पहेली' की,
हल ढूँढ़ने में याद आती मदद सखी सहेली की।
वाह क्या कहना कालम 'पढ़ो और हँसो' का,
पढ़कर लोटपोट हो जाता है मन हम बच्चों का।
आखिर चित्रकथा में 'दादाजी' की शिक्षा,
देती हमारे जीवन को सही दिशा।
इसकी प्यारी–प्यारी कविताएं,
मन आंगन को चहकाती हैं।
बच्चे करते तेरा शुक्रिया,
रहते इंतजार में तेरे सदा।
हँसती दुनिया, हँसती दुनिया,
हमें बहुत कुछ सिखलाती है।
बच्चों की ये प्यारी दुनिया,
सबका मन मोह ले जाती है।

– बाल संगत (कारवार)

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया घर मंगाये,
आप पढ़ें औरों को पढ़ायें।
पत्रिका है ये बड़े ज्ञान की,
बच्चों के बौद्धिक उत्थान की।
इस में लेख, कहानी, कविता,
पढ़ो हँसो अच्छा लगता।
'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो',
पाठ सभी मनमोहक पढ़ लो।
अच्छे गुण, अच्छे संस्कार,
भरती बच्चों में नेक विचार।
इससे बाल भविष्य सजेगा,
सुन्दर स्वस्थ समाज बनेगा।
हँसती दुनिया का अर्थ है ये,
सारा जहाँ हँसे मुस्काये।

– रामअवध राम

वर्ग पहेली के उत्तर

■	1 फि	लि	2 प	■	3 भ
■	रो	■	4 ह	जा	र
5 गु	ज	रा	ल	■	त
■	पु	■	6 वा	यु	■
7 इ	र	8 वि	न	■	9 बि
रा	■	दु	■	10 रा	हा
11 क	त	र	■	12 नी	र

अगस्त अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

खुशी शाक्या
आयु 13 वर्ष
म. नं. 308, महावीर नगर,
भरथना (उ.प्र.)

द्वितीय :

सुमृति गडाही
आयु 12 वर्ष
बी–4, शिवकृपा अपार्टमेंटस
देहरादून (उत्तराखंड)

तृतीय :

अर्पिता सक्सेना
आयु 8 वर्ष
एम–14, इन्कम टैक्स कॉलोनी,
टोंक रोड, दुर्गापुरा,
जयपुर (राजस्थान)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

आरती (भटिण्डा),
शुभनीत पुंज
(हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, फरीदाबाद),
सचिन (बालसमन्द),
भाविका (पंजाबी बाजार, जीन्द शहर),
दमनप्रीत (बंगा),
अंकिता प्रजापति (मलिकपुर),
अदिव्य गुप्ता (जे.एन.वी. कॉलोनी,
बीकानेर), मयंक निरंकारी (रावतसर),
हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गांव),
भव्यम (नाभा रोड, पटियाला),
शाम्भवी जैन (बड़ा फुहारा, जबलपुर),
रवि कुमार कुकरेजा (खुई–खेड़ा),
वैभव किशोर सूर्यवंशी (डांगोली बांगर),
सुमन प्रजापति (से. 30, गाँधी नगर),
आन्या अहलुवालिया (पीतमपुरा, दिल्ली),
जगरूप सिंह (अधोया),
सिमरन चोपड़ा (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
हर्ष रोहिडा (शिवानंद नगर, रायपुर),
रोहित चन्देल
(मलकापुरम, विशाखापटनम),
सुदीक्षा राठौर (कवैया),
लक्षित किशोर बघेल (काशीपुर),
आस्था और खुशी (खजूरी खास, दिल्ली),
सिमरन रैकुनी (अल्मोड़ा),
भूमिका कुमारी (मोहाली),

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 अक्टूबर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

चित्र पहेली

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

न्यू गाइना और उत्तरी आसट्रेलिया के जंगलों में पाया जाने वाला खतरनाक पक्षी कैसोवरी अपने पैरों के अंगूठे के अंदर वाले छूरे जैसे पंजे से आदमी के पेट को सरलता से फाड़कर हत्या कर सकता है। उस 6 फीट ऊँचे पक्षी का चित्र 1 से 33 तक के बिंदु मिलाकर बनाइए।

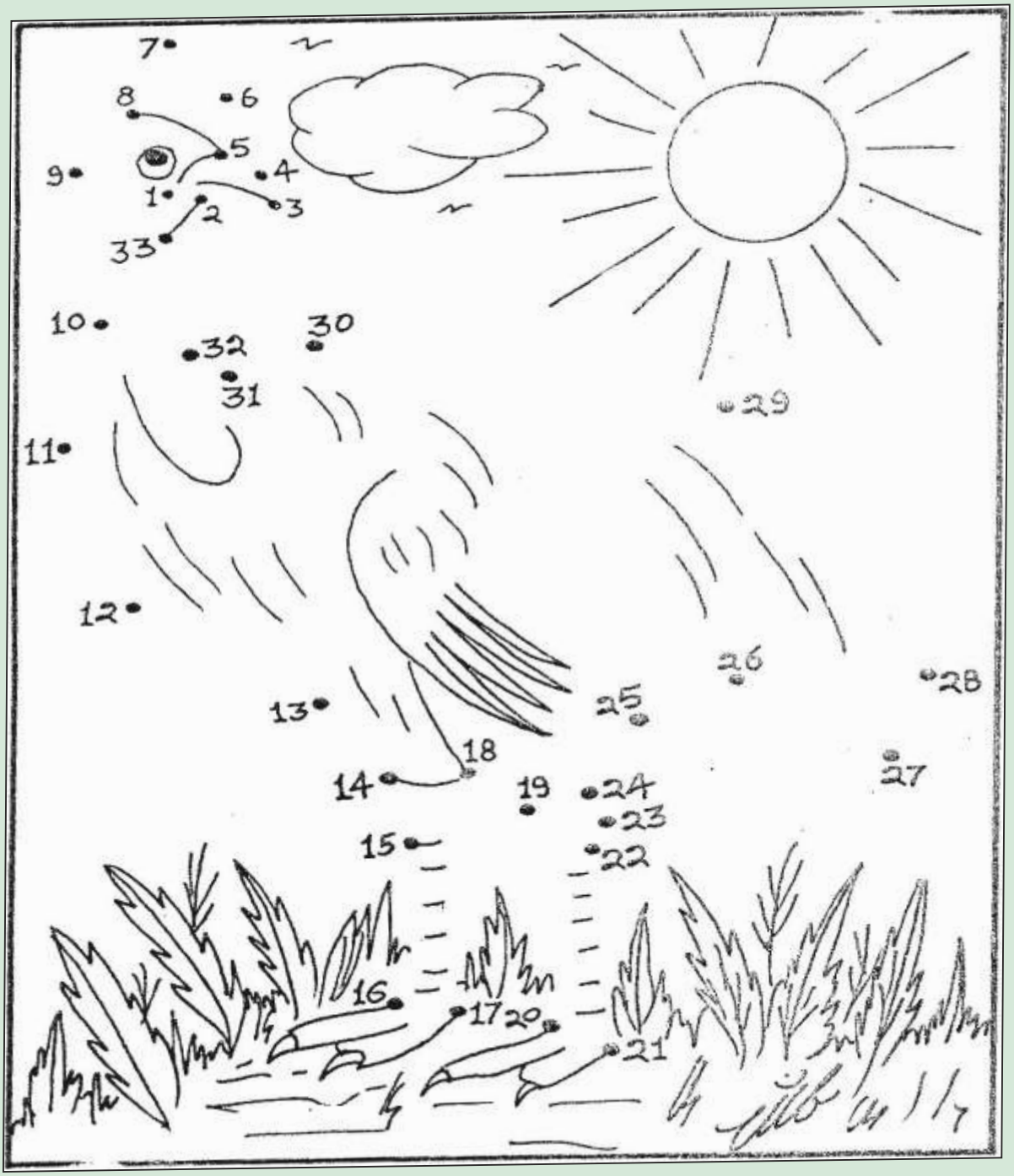

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan, #7, Govindan Street, Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, Kazidiha, Post Madhupatna, CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan, No. 6-2-970, Khairtabad, HYDERABAD-Pin : 500 029
Ph. 0104-23317879

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 31, Pratapganj, VADODARA-390002 (Guj.)
Ph. 0285-275068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 88, Rattanvillas Road, Southend Circle, Basavangudi, BELGURU-560 004 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan, KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd, Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)